www.facebook.com/anivaryaprashna

हिन्दी मासिक

अनिवार्य प्रश्न?

चन्दौली–वाराणसी से सम्पूर्ण भारत के लिए प्रकाशित

वर्ष 01, अंक 02, सितम्बर, 2019, संयुक्तांक, पृष्ठ: 12, : सहयोग मूल्य : 11 रुपए

अगर पढ़िए तो सिर्फ सच पढ़िए!

बार बार प्रतिबंधित होती पत्रकारिता... 6

हमारे शहर की चुनौतियाँ... 6

रंगकर्मी नहीं रंग सेवक कहिये... 7

अब अखण्ड भारत में समाए पी.ओ.के. व अक्साई चीन

जम्मू-काश्मीर भारत का एक ऐसा अभिन्न राज्य था जिसे बताने के लिए मजबूरन इस राज्य के साथ हमें ''अभिन्न हिस्सा'' शब्द को जोड़ना पड़ता था, जबकि इस शब्द का प्रयोग दूसरे राज्यों के साथ नहीं किया जाता था। भारत सरकार के इस कदम के चलते अब देश की अन्य मजबूरियों के साथ यह मजबूरी भी खत्म हो गयी ... **मोनेश श्रीवास्तव**

भारतवर्ष अब तक जिस राज्य को अपना अटूट हिस्सा कहता रहा उसे पूर्ण रूप से हिस्सा बनने में सत्तर साल लग गये। देर से ही सही लेकिन आजादी की अभिलाषा को इंसाफ मिला है। देश के प्रधानमंत्री व गृहमंत्री ने ये साबित कर दिया कि अगर इच्छा शक्ति दृढ हो तो देश हित में कठिन से कठिन फैसले लिये जा सकते हैं और लिये जाने चाहिए। गृहमंत्री अमित शाह ने भारत की छाती पर कांटे की तरह घंसे धारा 370 और 35A को निकाल फेंका है। इसके साथ ही भारत के इतिहास में बदलाव हुआ और नक्शे पर उभरा दो केंद्र शासित प्रदेश जम्मू–काश्मीर और लद्दाख। लद्दाख के बाशिंदों की पिछले काफी वक्त से मांग भी थी कि उन्हें एक अलग केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा दिया जाए ताकि उनकी मूलभूत सुविधाओं का विकास हो सके। रही बात जम्मू–कश्मीर की तो वहां भारत सरकार में अमित शाह का पदार्पण शायद उसी के इतिहास को गढ़ने के लिए हुआ। इस कानून को जम्मू–कश्मीर के विकास का विरोधी और आतंकवाद का समर्थक माना जाता रहा है। जिसे हटाने की मांग काफी वक्त से उठती रही है। 2019 के लोकसभा चुनाव में यह भाजपा का चुनावी मुद्दा भी था।

जम्मू–कश्मीर भारत का एक ऐसा अभिन्न राज्य था जिसे बताने के लिए मजबूरन इस राज्य के साथ हमें 'अभिन्न हिस्सा' शब्द को जोड़ना पड़ता है। जबकि इस शब्दावली का प्रयोग दूसरे राज्यों के साथ नहीं किया जाता था। भारत सरकार के इस कदम के चलते अब देश के सामने ये मजबूरी भी खत्म हो गयी। इस मजबूरी का बोझ भारत 73 सालों से ढोता आ रहा है जो मात्र एक गलत निर्णय के कारण बना था। इस समस्या की शुरुआत पं. नेहरू के कार्यकाल में हुई और 5 अगस्त 2019 को इसका समापन किया गया। एक संवैधानिक धारा जिसे जनता की आंखों से छिपाकर लागू कर दिया गया और जम्मू–कश्मीर को विशेष राज्य बना दिया गया। धारा 370 ने इस राज्य का विधान, निशान और प्रधान तीनों बदल दिया। सालों से मांग उठती रही कि कश्मीर से धारा 370 को खत्म किया जाए लेकिन किसी भी सरकार की इतनी हिम्मत नहीं हुई कि इसके विषय में सोच भी सके। वर्तमान सरकार ने इसे अपना चुनावी मुद्दा बनाया और सरकार गठन के साथ ही इसे हटाकर जम्मू–कश्मीर को आजाद कराने की मुहिम शुरू कर दी। जिसे 5 अगस्त दिन सोमवार को अमली जामा पहना दिया गया।

धारा 370 के चलते जम्मू–कश्मीर में भारतीय संविधान लागू नहीं था और इसके कारण जो भी योजनाएं जनता की सुविधा के लिए बनाई जाती थीं वह वहां पहुंच नहीं पाती थीं।

ikfdLrku ds fy, Hkh[k ekxus dh fy, fu;rh Fkh dk'ehj

जिस कश्मीर के लिए पाकिस्तान दुनिया भर में घूम–घूम कर डॉलर मांगता फिर रहा था उसके हाथ से भारत सरकार ने कटोरा ही छीन लिया। भारत में आतंकवाद फैलाने का सबसे बड़ा रास्ता अब बंद हो गया है। पाक ने अपनी संसद के जरिए भारत को धमकी देने की कोशिश की लेकिन उसकी संसद के ही लोगों ने उनके मंसूबे पर पानी फेरते हुए पहले अपने हालात सुधारने की नसीहत दी। वहीं अंतराष्ट्रीय स्तर पर पाक अलग–थलग पड़ चुका है। इस बौखलाहट में उसने भारत से व्यापारिक संबंध खत्म करना शुरु कर दिया, लेकिन इसका खामियाजा उसे कुछ ही दिनों में खुद भुगतना पड़ेगा।

अब वहां रहने वाले लोगों की मूलभूत सुविधाओं की व्यवस्था और उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने का काम शुरु किया जा चुका है। धारा 370 हटने के बाद लगातार एक माह बाद भी जम्मू–कश्मीर में स्थिति सामान्य है। एहतियात के तौर पर वहां पर इंटरनेट, फोन लाइन, मोबाइल सुविधा बंद की गयी थी जो केन्द्र सरकार के सूत्रों के अनुसार धीरे–धीरे बहाल कर दी जाएगी। ये फैसला सरकार को इस लिए लेना पड़ा कि जो अलगाववादियों के मंसूबे हैं उन्हें पूरी तरह से रोका जा सके।

स्थानीय नागरिक ने किया स्टिंग ऑपरेशन

नटिनिया दाई भांग की दुकान पर बिकता है गांजा

आप भी बन सकते हैं **Social Reporter**

अपराध, भ्रष्टाचार व शोषण की वीडियो बनाइए और हमें भेज दीजिए

9161099088

anivaryaprashna@gmail.com

पूरी खबर विस्तार से पढ़ें पृष्ठ 03 पर

सामाजिक संस्थाओं ने किया वाराणसी के जिलाधिकारी

सुरेन्द्र सिंह का सम्मान

वाराणसी। रायफल क्लब स्थित जिलाधिकारी कार्यालय में वर्तमान जिला अधिकारी श्री सुरेंद्र सिंह का सम्मान किया गया। वाराणसी की कई सामाजिक संस्थाओं ने संयुक्त रूप से उनका यह सम्मान उनके विगत दिनों मानवीय न्याय, सामाजिक न्याय एवं धर्म–जीवन रक्षा के कई महत्वपूर्ण निर्णय एवं श्रेष्ठ जनपदीय प्रशासनिक प्रबंधन के लिए किया।

जिन संस्थाओं ने आदरणीय जिलाधिकारी का सम्मान किया उनमें समाज, संस्कृति एवं साहित्य सेवा में सक्रिय ''उद्गार'' संगठन, नगर की प्रमुख राष्ट्रवादी संगठन ''इंडिया विद विजडम ग्रुप'', सत्यनिष्ठ समाचार समूह ''अनिवार्य प्रश्न'' शहर की प्रमुख समाज सेवी संस्था ''म्यामार बुद्धिष्ठ कल्चरल सेन्टर''ट्रस्ट, ''कृति काव्य मंच'' ''समर्पण महिला कल्याण समिति'', ''समर्पण युवा कल्याण समिति'' एवं सनातन धर्म संरक्षण में अग्रणी संगठन ''विश्व सनातन सेना'' प्रमुख रुप से उल्लेखनीय रहे।

इस अवसर पर इंडिया विद विजन ग्रुप के अध्यक्ष अधिवक्ता कमलेश चंद्र त्रिपाठी ने कहा कि ''आदरणीय जिलाधिकारी ने मानवीय संवेदना एवं जीवन की महत्ता को समझते हुए विगत

शेष पृष्ठ 02 पर...

सूचना विभाग के लिपिक अनिल पर दुराचरण का आरोप

अनिवार्य प्रश्न
विशेष संवाददाता

वाराणसी। जिला सूचना विभाग के क्लर्क अनिल श्रीवास्तव की लापरवाही और मनमानी अक्सर सामने आती तो रहती ही है पर हाल ही में एक बड़ा प्रकरण घटित हुआ है। वाराणसी जिला सूचनाधिकारी कार्यालय का लिपिक अनिल श्रीवास्तव इस बात को निर्धारित करता है कि प्रशासनिक क्रिया व योजना की किस समाचार पत्र को सूचना दी जाए या न दी जाए। नियम कानून को ताक पर रख मनमाने ढ़ंग से समाचार पत्रों की हैसियत तक तय कर रहा है।

इतना ही नहीं जनपद के विकास के लिए आने वाली योजनाओं और आला अधिकारियों द्वारा की जाने वाली कार्यवाहियों की सूचना देने से साफ इनकार भी कर रहा है। दुर्भाग्य इस बात की है कि सूचना विभाग के अधिकारी इसकी बे–अदबी का खुलकर समर्थन कर रहे हैं। इस संदर्भ में जिला सूचना अधिकारी का कहना है कि हम बड़े समाचार पत्रों से सरोकार रखते हैं शहर में बहुत सारे फर्जी पत्रकार ऐसे घूमते रहते हैं जो खुद को बड़े अखबार का बताते हैं। लिपिक अनिल की बदसलूकी की बात जब उनसे कही गयी तो वह उसके समर्थन में कसीदे पढ़ने लगे।

अनिवार्य प्रश्न समाचार पत्र की ओर से जिला प्रशासन द्वारा आयोजित होने वाली विकास योजनाओं समेत तमाम जानकारियां जो

लिपिक अनिल श्रीवास्तव

अन्य अखबारों को ई–मेल और ह्वाट्सऐप द्वारा भेजी जाती हैं की प्राप्ति के लिए कई बार अनुरोध पत्र भेजा गया और पत्र नियुक्त संवाददाता भी लिपिक अनिल से मिलकर सूचना के आदान प्रदान के लिए अनुरोध किए। हमारे संवाददाता रविन्द्र प्रजापति के अनुसार उसने पहले तो महीनों तक दौड़ाया फिर दो हजार का खर्चा–बर्चा बताने लगा। अख़बार समूह ने जब बिना रिसिविंग के पैसा न देने की बात कही तब वह कहने लगा कि साप्ताहिक और मासिक समाचार पत्रों को समाचार पत्र नहीं मानता है।

संवाददाताओं के कई बार अनिल से मिलने के बाद बीते दिनों उसने एक संवाददाता से बदसलूकी की और उसने स्पष्ट कह दिया का तुम्हारे समाचार पत्र को मैं सूचना नहीं भेजूँगा जो करना हो कर लो। पैसा नहीं मिलेगा तो सूचना नहीं मिलेगी। फोकट में तो पानी नहीं मिलता। तुम चमार हो क्या? तुम्हें किस भाषा में समझाएँ हिन्दी में, संस्कृत में या उर्दू में?

इस मामले में अनिवार्य प्रश्न के

- खुद बनता है जिला सूचना अधिकारी सूचना भेजने व पास बनाने में माँगता है घूस
- अनिवार्य प्रश्न के कार्यकारी संपादक और संवाददाता से की बदसलूकी
- किया जाति सूचक टिप्पणी व अभद्र भाषा का प्रयोग

कार्यकारी संपादक ने जब अनिल से बात की तो उसने पहले ई–मेल में गड़बड़ी होने की बात कही फिर बताया कि आपके समाचार पत्र को सूचना नहीं भेजी जा सकती है, और आगे भी नहीं भेजी जाएगी। इस बारे में जब और जानकारी मांगी गयी तो उसने फोन काट दिया। दोबारा फोन मिलाने के बाद उसने बात करने का लहजा बदल लिया और गलियाई शब्दों में सूचना देने से इनकार कर दिया और अपमान जनक शब्दों का प्रयोग किया।

इसी के दुर्व्यवहार की शिकायत कई पत्रकारों ने दबी जबान में की है। उनका कहना है कि वीआईपी कार्यक्रमों के दौरान पास बनाने में भी अनिल भेदभाव करता है। कम ज्यादा सभी पत्रकार व छायाकार अनिल से पीड़ित हैं। सूचना विभाग को अपनी जेब में समझने वाला लिपिक अनिल लगभग आठ वर्षों से वाराणसी में जमा हुआ है। वह दबंगई और मनमानी करता है एवं हर बार अपना तबादला रोक लेता है।

कार्यकारी संपादक ने प्रबंधन एवं विधिक सलाहकार से बात की है तथा अनिल के खिलाफ शिकायत व वाद की कार्यवाई की जा रही है। सत्य का संघर्ष न्याय तक चलेगा।

अगर आप किसी भ्रष्टाचार, शोषण या अपराध को जानते हैं तो हमसे साझा करें!

संवाददाता बनने का सुनहरा अवसर विस्तार से देखें पृष्ठ 03 पर...

बहस ठंढ़ी हुई जरुर है पर रुकी नहीं है

न्याय या अन्याय आरक्षण

: कमलेशचन्द्र त्रिपाठी

हमारे संविधन निर्माताओं ने संविधान की मूल भावना के विपरीत सामाजिक समरसता कायम करने के उद्देश्य से आजादी के पूर्व समाज में व्याप्त विकृतियों व गंभीर सामाजिक असंतुलन को दूर करने के लिए प्राविधान समाज के उनकी विशेष लोगों के लिए किया जो दासता की विषम परिस्थितियों में अपने उत्थान का समुचित अवसर न प्राप्त कर पाने के कारण देश के अन्य नागरिकों के मुकाबले देश की मुख्य धारा से कट चुके थे। परन्तु हमारे लोकतांत्रिक राजनीतिक चिन्तकों ने सारे सिध्दांतों को दरकिनार कर 'आरक्षण' पर ही समाज में गोलबन्दी कायम कराकर की। विभेद को बढ़ावा देकर जातीय समीकरण के जोड़–तोड़ के माध्यम से उसका राजनीति का ब्रह्मास्त्र बना लिया गया है। राजनीतिक रूप से आरक्षण की वर्तमान व्यवस्था पर देश की मौजूदा स्थिति के परिप्रेक्ष्य में भी सच बोलने की हिम्मत दिखाने का साहस किसी भी राजनीतिक दल में नहीं है। आज के राजनीतिज्ञ आरक्षण को अपनी राजनीतिक हत्या समझ रहे हैं। हमारी सोच व प्रवृत्ति इतनी गिर चुकी है कि हमारे मुक्तखोरी की प्रवृत्ति आरक्षण, सब्सिडी व अन्य मामलों में घातक रुप से राष्ट्रीय क्षति को नजरअंदाज कर बढ़ती चली जा रही है। देश परिवार व समाज की बड़ी इकाई है तथा देश का हर नागरिक देश का ही अंश होता है।

देश के प्रत्येक नागरिक के जीवन उत्थान से ही सशक्त राष्ट्रीय हित सुसज्जित होता है। परन्तु हम स्वार्थ में इतने अंधे हैं कि स्वयं के लाभ के लिए देश, समाज के अन्य नागरिकों की अवहेलना करने में रंच मात्र भी समय नहीं गंवाते हैं। समाज में आरक्षण असहाय, बेबस, निरीह व कमजोर व्यक्ति का घोतक होने के बजाय आज स्वार्थवश सामाजिक मजबूती व सम्मान का घोतक बनता चला जा रहा है। अन्य वर्गों के मुकाबले स्वयं को असहाय व निरीह दर्शित करने में हम स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे है। वर्तमान परिवेश में गलत राजनीतिक व सामाजिक व्याख्या तथा हमारी स्वार्थी सोच के कारण आरक्षण अपने मूल स्वरुप से वंचित होकर आज देश में सामाजिक समरसता कायम करने के स्थान पर सामाजिक विषमता व जातीय विभेद बढ़ाने का मूलकारण बन चुका है। वर्ग विशेष के लिए निर्धारित आरक्षण का लाभ उस वर्ग के कुछ लोगों तक कई बार पहुंच चुका है तथा उसी वर्ग के ज्यादातर लोग आज भी आरक्षण से पूर्णतया वंचित है।

जबकि संविधान की मूलभावना के अनुसारं आरक्षण के माध्यम से उस वर्ग के समस्त लोगों तक इस व्यवस्था का लाभ सामाजिक समरसतता हेतु पहुचना आवश्यक है। 65 वर्ष के अन्तराल के पश्चात देश, समाज व परिवार, संस्कृति, समाज व खान–पान पूर्णतः बदल चुका होता है। परन्तु हम अपनी व्यवस्था को बदलने में राष्ट्रीय सामाजिक हित के विपरित जातीय व राजनीतिक हित के अनुरुप परिवर्तन से परहेज करते हैं। आरक्षण का मूल उद्देश्य तभी प्रभावी रुप में समाज में परिवर्तन ला सकता है जब हम जिम्मेदार नागरिक के तौर पर समग्र राष्ट्रीय हित के अनुसार चिन्तन करें। समाज के एक वर्ग विशेष के उस व्यक्ति को तथा उसके परिवार को आरक्षण के लाभ से तब तक वंचित रखा जाना चाहिए जब तक उस वर्ग में समस्त लोगों तक संरक्षण का लाभ नहीं पहुच जाता है अन्यथा समाज में वर्ग विशेष में ही गंभीर आर्थिक व सामसजिक असंतुलन पैदा हो जाएगा। राष्ट्रीय हित के अनुसार आरक्षण में शारीरिक व शैक्षिक योग्यता में छूट के प्रावधान को पूर्णतया समाप्त किया जाना चाहिये अन्यथा कार्य विशेष के लिए निर्धारित योग्यता में कम योग्यता को धारण करने वाला जब आरक्षण के दम पर किी पद विशेष को धारण करेगा तो कल वह सामाजिक रुप से तिरस्कृत होता जाएगा। क्योंकि ऐसे व्यक्ति की निर्धारित मानक के अनुरूप योग्यता धारण किए बगैर आरक्षण के दम पर पद धारण करने से समाज के अन्य लोग उस व्यक्ति की कार्य कुशलता पर प्रश्नचिन्ह लगाकर उसे उपेक्षित करते रहेंगे।

वर्तमान समय में देश में आरक्षण का विरोध नहीं उसे समग्र रूप से संवैधानिक व्यवस्था के? सोच के अनुरुप परिमार्जित रूप से लागू किए जाने की आवश्यकता है। एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर आरक्षण का लाभ प्राप्त कर चुके व्यक्ति द्वारा या संसाधनों के द्वारा अपना समुचित विकास कर लेने के बाद लाभ प्राप्त को स्वेच्छा से त्याग कर देना चाहिए ताकि उस वर्ग के अन्य लोग ऐसे प्रावधान का समुचित लाभ उठाकर अपना उत्थान कर सकें। आरक्षण राजनीति का हथियार नहीं बल्कि समग्र राष्ट्रीय हित के अनुरुप सामाजिक उत्थान व समानता कायम करने का प्राविधान है। राजनीतिक दलों द्वारा इस पर वोट बैंक की राजनीति व गोलबंदी बंद कर हर कमजोर को आरक्षित किया जाना चाहिए। 10 प्रतिशत के लॉलीपॉप से बहस ठंडी पड़ी है, खत्म नहीं हो गई।

ख़बर विशेष

पुलिस को कब दिखेंगें आटो वाले

बनारस सहित लगभग सभी शहरों में चलने वाले ऑटो रिक्शा मानक के उल्लंघन करने में मशगूल हैं। एक भी ऑटो ना ही सही जगह पार्किंग की जाती है ना ही मानक के अनुसार सवारी भरकर चलती है। आड़े–टेढ़े और गलत जगह खड़ा करने के लिए तो इनके उदाहरण दिए जाते हैं। ऐसे में पुलिस विभाग को ओवरलोड सवारी भरना, आड़े–टेढ़े चलना, सड़क के बीच रोककर सवारी उठाना, चौराहों के नुक्कड़ को चारों तरफ ऑटो खड़ा कर जाम कर देना क्यों नहीं दिखता। पुलिस अधीक्षक महोदय का ध्यान आकर्षित कराते हुए उन्हें अवगत कराना है कि शहर के ऑटो वालों को ठीक कर दें जाम से मुक्ति मिल जाएगी।

तीसरी आँख की निगरानी, आम जनता की बड़ी परेशानी

वाराणसी। स्मार्ट सिटी योजना के तहत चौराहे पर लगाए गये कैमरों की मदद से वाहन चालकों का यातयात के नियमों के उलंघन के नाम पर सिटी कंट्रोल कमांड से चलान काटा जा रहा है। जिससे आम जनता की मुश्किले काफी बढ़ गयी हैं। कोई बच्चे को स्कूल छोड़ने जा रहा है कोई बगल से सब्जी लेने जा रहा है, कोई बस दो कदम की दूरी भी रांग साइड से अपने समय व दूरी को बचाने के लिए जाता हुआ पाया गया तो उसका भी चालान काट कर उसके घर नोटिस आ जा रही है। यहाँ प्रशासन की नजर खस्ता हाल रोड़, चरमराई यातायात व्यवस्था पर न हो कर सिर्फ चालान काटने पर ही केंद्रित है। यहां कई जगह दस कदम की दरी तय करने के लिए भी लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है। एक तो जाम की स्थिति से आम जनता बहुत ही मुश्किलो का सामना कर रही है। शहर की यातायात व्यवस्था, सड़क व्यवस्था पूरी तरह से अस्त व्यस्त हो गयी है। वहाँ एक महीने में लाखों लोगो का चलान कट जाना कहाँ तक उचित है। ज्यादा तर चालान बिना हेलमेट व रांग साइड चलाने पर ही काटा गया है।

बदस्तूर जारी है

तीन तलाक

- मिर्जापुर की है घटना
- 18 वर्ष बाद बहसी ने दे दिया तलाक
- पुलिस माँग रही शादी का सर्टिफिकेट

मिर्जापुर ॥ अ.प्र. संवाददाता

मिर्जापूर। पिछले दिनों कठोर कनून बनने तथा लगभग डेढ़ दशक साथ बिताने के बाद भी एक पति ने अपनी पत्नी को तीन तलाक देकर घर से निकाल दिया। महिला ने विगत 17 अगस्त को स्थानीय एएसपी सिटी से इसकी शिकायत दर्ज कराई है। न्याय नहीं मिलने पर महिला ने अपने शौहर के दरवाजे जाकर आत्मदाह करने की धमकी दी है। वही मिर्जापुर पुलिस शादी का प्रमाण पत्र खोज रही है। उसका कहना है कि शादी शाबित होने के बाद ही कार्रवाई की जा सकती है।

महिला ने बताया कि वह जौनपुर के रामपुर थाना क्षेत्र की रहने वाली है और उसकी शादी 18 साल पहले ही हो चुकी है। 18 वर्ष पूर्व कटरा कोतवाली के महंथ शिवाला निवासी एक युवक वहां कालीन बुनाई का काम करता था। उसी दौरान दोनो मे प्रेम संबंध बना। फिर युवक उसे मिर्जापुर ले आया और यहां मुस्लिम धर्म के अनुसार निकाह किया। निकाह के सारे कागजात उसके सौहर के पास ही हैं। तब से वह उसके साथ रह रही थी। विवाहिता का आरोप है कि तीन माह पूर्व उसके पति ने उसे तीन तलाक देकर घर से निकाल दिया है। उसने आगे बताया कि पति का प्रभाव है जिससे कटरा कोतवाली में तहरीर देने पर सुनवाई नहीं हुई। इसके बाद एएसपी मिर्जापुर से शिकायत कर रही है। शादी के दो साल बाद गर्भवती होने पर पति ने गर्भपात करवा दिया था। एएसपी सिटी प्रकाश स्वरुप पांडेय के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार विवाहिता उनके पास आकर शादी के 18 साल बाद घर से निकाले जाने की शिकायत की है। उसके पास उसके विवाह का कोई प्रमाणपत्र नहीं था। मामले की जांच की जा रही है। शादी प्रमाणित होने पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएंगी।

प्रथम पृष्ठ का शेष

सामाजिक संस्थाओं ने...

दिनों समाज की रक्षा में बड़ा काम किया है जिसके लिए उनका सम्मान करना आवश्यक था। आज हम लोग उनका सम्मान कर खुशी महसूस कर रहे हैं।'' वहीं उद्गार साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था के संस्थापक छतिश द्विवेदी कुंठित ने कहा कि ''वाराणसी में अनेकों जिलाधिकारी आए व आते रहेंगे किंतु वर्तमान जिलाधिकारी महोदय द्वारा मानवीय न्याय की रक्षा व सामाजिक न्याय के संरक्षण में महती भूमिका निभाई गई है। जो युगों तक याद किया जाता रहेगा। ऐसा काम करने वाले श्री सिंह का आदर कर हम सब गौरव का अहसास कर रहे हैं। हम सभी जिलाधिकारी को उनके उत्कृष्ट काम के लिए शुभकामनाएं एवं बधाई देते हैं।''

काशी की यह सभी सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की रक्षा एवं प्रसार करने वाली संस्थाएं आदरणीय जिलाधिकारी सुरेंद्र सिंह का सम्मान उनके सांस्कृतिक संरक्षण एवं सामाजिक सेवा के साथ उचित प्रशासनिक प्रबंधन के लिए कीं। सभी ने उनको आगे इसी तत्परता से प्रशासनिक एवं सामाजिक सेवा में जुटे रहने की कामना के साथ उन्हें धन्यवाद दिया। इस अवसर पर श्री सिंह ने सत्यनिष्ठा पूर्वक समाज की सेवा में जुटे रहने का वचन दिया एवं सभी संगठनों एवं प्रमुखों का आभार प्रकट किया। जिलाधिकारी ने शहर की प्रमुख चुनौतियों की बात समाजसेवियों से साझा किया एवं उनके सहयोग के लिए आवाहन भी किया।

जिलाधिकारी का सम्मान करने वाले समाजसेवी एवं साहित्यकारों में अधिवक्ता कमलेश चंद्र त्रिपाठी, छतिश कुमार द्विवेदी कुंठित, योगेंद्र नारायण चतुर्वेदी वियोगी, मोनेश श्रीवास्तव, डॉक्टर लियाकत अली, हर्ष वर्धन ममगाई, चंद्र प्रकाश सिंह, शैलेश मिश्रा, संजय गुप्ता, संतोष श्रीवास्तव प्रीत, रविंद्र प्रजापति, सूर्यप्रकाश सिंह, प्रसन्न वदन चतुर्वेदी, साहिल मौर्य, ए. लक्ष्मी (लखमी), कंचन लता मौर्य, विनय श्रीवास्तव, पंकज प्रजापति, मधुसूदन पाण्डेय, अनुराग पाण्डेय, आरती राय, अश्विनी राय, अवनीश राय, हनुमन्त सिंह, विकास तिवारी व दिलीप पाण्डेय आदि लोग मौजूद रहे।

कुछ तस्वीरों में

सामाजिक संस्थाओं ने किया वाराणसी के जिलाधिकारी सुरेन्द्र सिंह का सम्मान

अनिवार्य प्रश्न समाचार पत्र की ओर सम्मान करते हर्ष वर्धन ममगाई एवं मनोज मिश्रा 1 व 2

इंडिया विथ विज्डम ग्रुप के द्वारा सम्मान

''समर्पण महिला कल्याण समिति'' के द्वारा सम्मान

''म्यामार बुद्धिस्ट कल्चरल सेन्टर ट्रस्ट'' के द्वारा सम्मान

''हिन्दू जाग्रति मंच'' के द्वारा सम्मान

''उद्गार'' संस्था के द्वारा सम्मान

''कृति'' काव्य मंच के द्वारा सम्मान

''विश्व सनातन सेना'' के द्वारा सम्मान

मुम्बई में हुआ अंतरराष्ट्रीय एनजीओ एक्सपो का आयोजन

मुम्बई ब्यूरो। भारत विकास परिषद के मलाड ब्रांच ने सीएसआर लाइव वीक द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय एनजीओ एक्सपो में भाग लिया। यह कार्यक्रम वर्ल्ड ट्रेड सेंटर कोलाबा मुंबई में हुआ। वक्ताओं में भारत और विदेशों से प्रख्यात व्यक्तियों को शामिल किया गया था। एक्सपो में आरपीजी फाउंडेशन जेएसपीएल फाउंडेशन आर.ई.सी. फाउंडेशन ओएनजीसी फाउंडेशन वकार्ड और टाटा फाउंडेशन शामिल आदि थे।

उल्लेखनीय है कि परिषद ने इस रोमांचक कार्यक्रम में एनजीओ पार्टनर के रूप में भाग लिया और स्टाल पर सेवाओं का प्रदर्शन भी किया जिसमें सभी प्रमुख गतिविधियों को बड़े विनाइल और रंगीन पोस्टर द्वारा टीवी पर दिखाया गया। इस कार्यक्रम में प्रान्त अध्यक्ष श्याम सुंदर खेतान, शाखा अध्यक्ष जितेंद्र गुप्ता, प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर अनिल गाड़ोदिया और शाखा के 50 से अधिक सदस्य मौजूद रहे। साथ ही भारत विकास परिषद के प्रांतीय अधिकारियों और आमंत्रित अतिथियों ने भाग लिया।

श्री एस. एस. गुप्ता शाखा के पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान में संरक्षक को सभा को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। श्री एसएस गुप्ता जी ने सेवा इन इंडिया कल्चर विषय पर वक्तव्य दिया जिसे काफी सराहा गया।

अब रोमियों की खैर नहीं

छेड़खानी की बढ़ती घटनाओं के मद्देनजर पुलिस की सिविल ड्रेस में कार्यवाई तेज

अनिवार्य प्रश्न
शहर संवाददाता

वाराणसी। पार्कों, मालों, रेस्टोरेंट्स व घूमने–फिरने सैर सपाटे के स्थानों पर पुलिस ने अपनी सतर्कता बढ़ा दी है। शहर में बेरोक टोक घूमने वाले आवारा स्वतंत्र किस्म के रोमियो के लिए यह बुरी खबर है। पुलिस द्वारा सिविल ड्रेस में भी इन स्थानों पर सतर्कता बढ़ायी गई है।

पिछले दिनों छेड़खनी के मामलों के मद्दे नजर उसे रोकने के लिए पुलिस ने सादे लिबास में विभिन्न पार्कों, गोलघरों व सारनाथ के कई क्षेत्रों में जांच पड़ताल की। रोमियो मिजाजियों की धरपकड़ की गई। विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार पुलिस महकमा रोमियो मिजाज के लोगों को लेकर अब पहले से ज्यादा सतर्क हुआ है। सारनाथ के पार्कों, शकर के मॉलों, भीतरी हिस्सों के मैदानों, व्यायाम स्थलों, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स एवं थियेटरों सहित सुनसान सड़कों पर भी सिविल ड्रेस में पुलिस ने अपनी जांच पड़ताल बढ़ा दी है। विगत दिनों शहर के लगभग सभी पार्कों में जांच–पड़ताल की गयी व कई रोमियों को पकड़ा भी गया।

यह खबर महिलाओं के लिए राहत भरी खबर है, उल्लेखनीय है कि पुलिस ने गर्ल्स कॉलेजों/ स्कूलों सहित कॉलोनी की सड़कों पर भी सिविल ड्रेस में उनकी सुरक्षा के मछद्देनजर गस्त कर रही है। रिपोर्टों के अध्ययन से पता चला है कि यह प्रयास वर्तमान एसएसपी के आने के बाद और बढ़ाया गया है। वाराणसी पुलिस सुरक्षित समाज के निर्माण का प्रयास कर रही है।

लघु फिल्म PiDDHU का पोस्टर

वाराणसी। बसहीं स्थित एसएसएम स्कूल में आयोजित प्रतिभा विकास कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षित किए गए बच्चों द्वारा बनाई जा रही लघु फिल्म **PiDDHU** का निर्माण एचआरडी संस्थान व राघवेंद्र फिल्म प्रोडक्शन के बैनर तले हुआ है। यह लघु फिल्म दर्शकों के लिए 3 जुलाई से यूट्यूब पर पब्लिश की गई है।

प्रधान संपादक :
छतिश द्विवेदी ' कुंठित '
कार्यकारी संपादक : मोनेश श्रीवास्तव
सह संपापदक : नरेन्द्र मौर्य ' आहत '
साहित्य संपादक
योगेद्र नारायण चतुर्वेदी 'वियोगी'
वाणिज्य एवं खेल संपादक :
कमल चौरसिया

तस्करी में 15 साल जेल

- पूर्व आईपीएस साजी मोहन करता था ड्रग्स तस्करी
- सीमा पर तस्करी के जरिये लाई गई थी हिरोइन
- राजेश कुमार कटारिया को भी 10 साल कैद

मुंबई। पिछले दिनों देश में भ्रष्ट अफसरशाही की एक नजीर और सामने आई है। पूर्व आईपीएस अधिकारी साजी मोहन को मुंबई की एक विशेष अदालत ने ड्रग पदार्थ की तस्करी का दोषी ठहराते हुए 15 साल कैद की सजा सुनाई है। 2009 के एक मामले में अदालत ने हरियाणा पुलिस में कार्यरत कांस्टेबल राजेश कुमार कटारिया को भी 10 साल कैद की सजा का फरमान दिया है।

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के उस समय के जोनल निदेशक मोहन व कांस्टेबल कटारिया को नशीले पदार्थ की तस्करी में गिरफ्तार किया गया था। कांस्टेबल राजेश कुमार कटारिया तब साजी मोहन का ड्राइवर हुआ करता था।

जब्त की थी 12 किलो हेरोइन

तब महाराष्ट्र राज्य एटीएस ने साजी के कब्जे से कुल 12 किलो हेरोइन जब्त की थी। 12 किलो हेरोइन को जम्मू–कश्मीर सीमा पर तस्करी के जरिये लाया गया था। पुलिस जाँच दल की माने तो मोहन ने चंडीगढ़ में नारकोटिक्स ब्यूरो के जोनल निदेशक रहते हुए जब्त मादक में से 50 फीसदी की चोरी किया था और उसे मुंबई सहित देश के अन्य शहरो में ड्रग माफियाओं को बेच दिया था।

तनाव में हैं पुलिस कर्मचारी, बढ़ रही है दिल की बिमारी

- सारनाथ-शिवपुर व पुलिस लाइन में लगा कैंप
- पुलिस कर्मियों के स्वास्थ्य का हुआ परिक्षण
- सर्वाधिक पुलिस कर्मी हृदय रोग से ग्रसित

अ.प्र संवाददाता

वाराणसी। जिनके कंधो पर पूरे शहर की सुरक्षा की जिम्मेदारी है आज वह अपने खराब स्वास्थ्य से जूझ रहे हैं। यह बहुत ही दुःखद है। इस समस्या के समाधान के लिए विभाग उनकी कांसिलिंग करवा रहा है। जिससे वो शरीर के साथ–साथ दिल और दिमाक से भी सेहतमंद रहें। इसके लिए उन्हे उपयोगी योग आसन भी बताए जा रहे हैं।

इनके तनाव के कारण का पता करने पर पता चला कि यह शहर प्रधान मंत्री का संसदीय क्षेत्र होने की वजह से वी आई पी क्षेत्र वना हुआ है। जहाँ प्रधान मंत्री, मुख्य मंत्री व अन्य मंत्रियों का बराबर आना होता रहता है।

सही में त्योहार व सांस्कृतिक कार्यक्रम के कारण भी यहाँ पुलिस कर्मियों को छुट्टी मिलने में परेशानी होती है। ड्यूटी का कोई समय न होने व छुट्टी का दिन तय नही होने से पुलिस कर्मी बात–बात पर झुझलाते दिखते है। इस तनाव में ही वो नशा के आदि भी होते जाते हैं।

पिछले दिनों सारनाथ शिवपूर व पुलिस लाइन में कैंप लगाकर दो सौ पुलिस कर्मियों के स्वास्थ्य का परिक्षण किया गया था। सी ओ लाइन डा. अनिल कुमार का कहना है कि शिविर में सबसे अधिक हृदय रोग के मरीज मिले हैं। दूसरे नम्बर पर मधुमेह व ब्लडप्रेशर के रोगी हैं।

स्टिंग ऑपरेशन में हुआ खुलासा

नटिनिया दाई भांग की दुकान पर बिकता है गांजा

- बिना अनुज्ञापी के नाम का बोर्ड लगाए भांग की दुकान पर खुलेआम बिक रहा है गांजा
- स्थानीय के स्टींग आपरेशन में आया सामने
- गांजा 30, 35, 70 और 140 रुपये की पुड़िया में उपलब्ध
- प्लास्टिक के थैली का कर रहे प्रयोग

भाँग की दुकान जहाँ गाँजा बिकता है।

अनिवार्य प्रश्न
शहर संवाददाता

वाराणसी। भोले नाथ की नगरी में लोग नीयम कानून को ताख पर रख कर चलते है और जब बात बाबा के बूटी की हो तो कायदा–कानून कौन देखता है। बाबा की बूटी यानी भांग और गांजा, इनमें भांग बेचने की अनुमति तो सरकार से मिलती है लेकिन गांजा बिक्री करना गैर कानूनी है। आपको ये जानकर आश्चर्य होगा कि वाराणसी शहर में कई भांग की दुकानों में गांजा आसानी से उपलब्ध होता है। इसका खुलासा हुआ है एक स्टिंग ऑपरेशन में। एक स्थानीय नागरिक द्वारा किए गये स्टिंग ऑपरेशन में शिवपुर थानाक्षेत्र के नटिनियादाई इलाके में भांग की दुकान पर खुले आम गांजा बेचा जा रहा है। जिस आत्म विश्वास के साथ भांग की दुकान पर गांजा बेचा जा रहा है उससे साफ पता चलता है कि इस पूरे खेल में पुलिस और प्रशासन की मिलीभगत है।

अक्सर ये सुनने को मिलता है कि भांग की दुकानों में अवैध तरीके से गांजा बेचा जाता है। इसकी शिकायत भी लगातार मिलती रही है। गांजा एक उच्च कोटी का मादक पदार्थ है जिसकी बिक्री सार्वजनिक रूप से किया जाना अवैध होता है। लेकिन नटिनियादाई क्षेत्र में भांग की दुकान पर गांजा बेचे जाने की बात कई बार सामने आयी है लेकिन इस स्टिंग ऑपरेशन से पहले प्रमाणित नहीं हो सका था।

एक स्थानीय नागरिक ग्राहक बनकर भांग की दुकान पर पहुंचा और उसने गांजा मांगा तो दुकानदार ने उनसे पूछा कि कितने वाला चाहिए। फिर उसने पुड़िया का रेट बताया। बताया कि उसके यहां 30 रुपये, 35 रुपये, 70 रुपये और 140 रुपये की पुड़िया मिलती है। इसी दौरान एक और ग्राहक गांजा लेने पहुंचा और सीधे 35 रुपये बढ़ाया और पुड़िया लेकर चलता बना। नटिनियादाई इस भांग की दुकान से कुछ ही मीटर की दूरी पर चांदमारी पुलिस चौकी भी है, लेकिन दुकान वाले को इस बात का कोई खौफ नहीं है। अक्सर लोगों की शिकायत यह भी होती है कि भांग की इस दुकान से नाबालिग भी गांजा की खरीदारी करते दिखते हैं। एक ओर सरकार नशीले पदार्थ के सेवन से लोगों को रोकने के लिए लगातार जागरूकता अभियान चला रही है वहीं आबादी वाले इलाके में पुलिस और प्रशासन की नाक के नीचे खुले आम गांजा की बिक्री होना सरकारी मशीनरी की ईमानदारी और जिम्मेदारी पर सवालिया निशान लगाता है।

हिन्दी मासिक
अनिवार्य प्रश्न?
हर कलम बिकती नहीं!
अगर पढ़िए तो सिर्फ सच पढ़िए
समूह से प्रकाशित हो रहे साहित्यों व संस्करणों को
आवश्यकता है
परिपक्व एवं उत्साही पुरुषों व महिलाओं की।
रिपोटिंग व मार्केटिंग के अनुभवी को वरीयता।
योग्यता : 12वीं
वेतन : 10,000 रुपए तक
अपना बायोडाटा
हमें मेल करें
anivaryaprashna@gmail.com
: न्यूज लाइन :
9161099088
अधिक जानकारी के लिए संपर्क
समाचार कार्यालय : 1/252, नारायनपुर, भोजूबीर, वाराणसी–221003,
व मुंसफ कटरा, जी.टी. रोड, चन्दौली–232304, संपर्क : 9161099088

समाचार पत्र का यह अंक आपको कैसा लगा हमें बताएँ –
अपना सुझाव व आस–पास घटनाएँ हमसे साझा करें–
0 9161099088 या anivaryaprashna@gmail.com

कश्मीर कल और आज

प्रेस चेक पोस्ट

धारा 35ए के खिलाफ लड़ाई लड़ने वाले पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ट इस धारा को जम्मू-कश्मीर में किस नियत से लगाया गया इस बारे में 2014 से पूरे देश में लोगों के बीच जाकर जानकारी देते रहे हैं। भारत की जनता की जागरूकता का नतीजा ही है कि आज भारत सरकार धारा 370 को हटाने में कामयाब हुई। इस संदर्भ में हमने पुष्पेंद्र कुलश्रेष्ठ जी के साथ गहन बातचीत कर बीते समय से वर्तमान परिस्थिति तक विशेष पड़ताल की। पढ़ें विस्तार से...

/kkjk 370 vkj 35, d gVu d ckn D;k cnyko gvk vkj vkx gkxk\

370 हटने के बाद करीब साढ़े 12 लाख लोग अब सीधे तौर पर कश्मीर के नागरिक हो गये, जो अबतक भारत के नागरिक तो थे लेकिन जम्मू–कश्मीर राज्य के नागरिक नहीं थे। वह लोकसभा में वोट दे सकते है लेकिन विधानसभा में वोट नहीं कर सकते थे। ये वो लोग थे जो वेस्ट पाकिस्तान से बंटवारे के दौरान आये थे जिसमें ज्यादातर हिंदू थे। आर्टिकल 35 ए जो इन्हें नागरिकता से वंचित करने के लिए लगाया गया था। सन 57 में कश्मीर में सफाई कर्मियों की हड़ताल हुई तो पंजाब से वाल्मीकी समाज के लोगों को सफाई के लिए बुलाया गया और उन्हें नागरिकता देने का आश्वासन दिया गया लेकिन उन्हें नागरिकता दी नहीं गयी। वहीं जम्मू–काश्मीर के संविधान में एक एक्जीक्यूटिव आर्डर पास कर ये तय कर दिया कि उन्हें सिर्फ भंगी की नौकरी मिलेगी। 370 हटने के बाद अब वहां पर जो अलग झंडा था वह खत्म हो गया, राज्य सरकार का देश से अलग संविधान था वो खत्म हो गया। वहां की जो जमीने राज्य सरकार ने औने–पौने दामों पर बेच दी थी वह पूरी तरह से भारत सरकार के कब्जे में होगी। वहां बड़े घपले–घोटाले होते थे, जो नहीं हो पायेंगे, वहां पुलिस कमिश्नर होगा पुलिस सीधे केंद्र के अंतरगत होगी, नौकरियों का मामला राज्य सरकार के हाथ में नहीं होगा केंद्र डील करेगा। जो क्रूर पत्थर बाज निकलकर आते थे अब वो नहीं दिखेंगे क्योंकि अब पुलिस और सेना सीधे तौर पर उनके खिलाफ कार्रवाई करेगी।

D;k ihvkd tk ikd d dCt e g mld fy, vHkh db yMkbl yMuh gkxh\

देखिये पीओके शुरु से भारत का हिस्सा रहा है जो पाकिस्तान के कब्जे में है इस धारा से पीओके पर कोई असर तो नहीं पड़ा है लेकिन वहां की 24 सीटे जो है उन्हें रिजर्व रखा गया है। जब कभी उसपर भारत का कब्जा होगा वहां चुनाव होगा। खास तौर पर सारा जम्मू–कश्मीर जिसमें गिलगिट, बाल्टीस्तान भी है। लेकिन अभी तो मुद्दा ये था कि जो कश्मीर भारत के हाथ से निकलने वाला था पहले उसे पा लिया गया। जिसका इलाज कर दिया गया है। अब पाक के लिए कश्मीर का मुद्दा ही समाप्त हो गया है, बाकी पीओके तो हमारा है ही।

vkidh tk yMkbl /kkjk 35, d f[kykQ py jgh Fkh mle ljdkj dk lkFk ugh feyk blij vki D;k dgx\

हमने कोर्ट में 35ए को चौलेंज किया था जो एक धारा है। एक ऐसी असंवैधानिक धारा है जिसे लीगल तरीके से हटाया जा सकता था, हम तो एक कमरा मांग रहे थे भारत सरकार ने तो पूरा मकान हमें दे दिया। अब 370 के हटते ही सब कुछ खत्म हो गया। इससे वहा की राज्य सरकार कमजोर हो गयी, भारत की सेंट्रल फोर्सेज मजबूत हो गयी। वहां की लोकल पुलिस भी आतंकियों के साथ मिली थी और सरकार भी आतंकियों के साथ मिली रहती थी। व्यवस्था में 90 फीसदी फायदे खास वर्ग को दिये जा रहे थे और योजनाएं उसी वर्ग को मजबूत तथा हिन्दू को कमजोर करने के लिए बनाई जा रही थी। जो अब नही होगा। अब आप ये समझिये कि 12–13 लाख लोग जो वहां रह रहे थे वह वहां के निवासी हो गये। यकायक किसी केंद्र शासित प्रदेश में इतना वोटर बढ़ जाए तो सारा गणित बदल जाता है। इसका सबसे बड़ा फायदा ये होगा कि जम्मू–कश्मीर से जो गजवा–ए–हिंद को भारत में फैलानी की कोशिश हो रही थी उसे इस फैसले से लीगली कुचल दिया गया है।

हम पूरे भारत में घूम–घूम कर 35ए के खिलाफ और जो देश के संविधान में असंवैधानिक तरीके से जोड़ा गया था उसके बारे में लोगों को जागरूक कर रहे थे। फिर बीजेपी ने अपने मेनिफेस्टों में इसे डाला और उनको लगा की 370 को लेकर भारत में माहौल बन चुका है तो उसका पायदा उठाते हुए ये कार्रवाई की।

rk D;k vc d'ehjh ifMrk dh d'ehj okilh gkxh vkj gkxh rk dc rd\

अभी वहां पर सब नार्मल हो जाए, उसके बाद अलगावादियों को ठीकाने लगाना है। अभी कश्मीरी पंडितों को वहां पर वापस बसाने में काफी वक्त लगेगा, क्योंकि अभी वहां कि स्थिति में सुधार की जरूरत है। काफी समय लगेगा। पहला तो ये है कि भारत के अन्य लोगों को वहां जाना चाहिए जिससे वहां जो लोग अपना एक छत्र राज्य समझ रहे हैं उनको समझ आए। मेरा कहना है कि लोग जमीन खरीदें या न खरीदें सिर्फ लोग वहां जाए और जमीन को खरीदने के लिए जाए तो उसके बाद देश में ये मैसेज जाएगा की आप कश्मीर में जमीन खरीद सकते हैं, जैसे आप शिमला में फार्म हाउस बनाते थे अब यहां बनाईये। आप ये समझिये कि कश्मीर में जो वहां के पंडितों के साथ हुआ वो बुरा था, उनका वैल्यू सिस्टम ऐसा था कि वह लड़े नहीं लेकिन इसी तरह की कोई घटना यदि देश के किसी कोने में होती तो वहां पर पलट के वार होता।

अब इसके बाद अलगाववादी नेताओं का चाल क्या होगी, जिनकी पूरी राजनीति केंद्र ने खत्म कर दी और अब इन्हें किसका डर है?

देखिये, कुछ न कुछ तो वह करेंगे। क्योंकि उनके पास काफी पैसा है। हुर्रियत के जो नेता है वो तो सरकार की मदद से ही पल रहे थे। अब हुआ ये कि मीर वाइज उमर फारुक को एनआईए ने तोड़ दिया और उसे बताया कि जितनी तुम्हारी प्रापर्टी नाजायज बनी है उसे तोड़ दिया जाएगा, उसने सरेंडर कर दिया। अब हो ये रहा है कि अलगावादी खुद सरकार से सुरक्षा मांग रहे हैं क्योंकि इनकी तो पोल खुल रही है। इन्होंने कश्मीरियों के लिए आने वाले पैसे से अपना साम्राज्य खड़ा कर लिया था, अब जनता इन्हें पा जाएगी तो मार डालेगी। क्योंकि इनके बच्चे विदेशों में पढ़ रहे हैं और ये यहां की जनता को बेवकूफ बना रहे हैं।

yík[k dk vyx dju dk D;k dkbl [kkl dkj.k Fkk\

देखिये लद्दाख खास तौर पर कश्मीर से भौगोलिक दृष्टि से अलग ही है। लद्दाख चाइना तक जाता है। उसके लिए मांग पहले से ही उठ रही थी। वहां पहले से ही लद्दाख हिल काउंसिल बना रखी थी। इससे पहले लद्दाख के लिए जो पैसा आता था वो कश्मीर से होकर जाता था पर अब ऐसा नहीं होगा। अच्छा लद्दाख में बौद्धों को भी खदेड़ने में कश्मीरी अलगाववादी लगे हुए थे जो अब आतंक नहीं कर पाएंगे।

vku oky le; e vrjk"Vh; Lrj ij n[kk tk, rk D;k u, gkykr gk ldr g\

एलओसी तो बदली नहीं। ये सारा मामला आंतरिक है तो दुनिया इसपर क्यों बोलेगी। अब पाकिस्तान तो घूम–घूम कर चिल्लाएगा ही।

ये मौसम की गर्मी है जो मीडिया पर गिरी है

भणाय

रूपक व्यंग

लूह के थपेड़े अभी जरा थमें ही थे की उमस भारी उमस ने अपना चरमपंथ दिखाना शुरू कर दिया। जानकार बताते है कि इस उमस के कारण लोगों का दिमाग इतना गर्म हो जाता है कि हत्याओं का दौर भी बड़ जाता है। जैसा की आप ने पिछले महीने में देखा होगा कि शहर में कई हत्याएं होनी शुरू हुई और अभी भी जारी हैं। इन सभी विषय वस्तु को मीडिया उमस भरे पसीने से तरबतर होकर जमकर कवर करने में जुटी हुई है। लोगों के सामने सच लाने के लिए। अरे लेकिन ये क्या यहां तो मीडिया खुद ही भुक्त भोगी बनती जा रही है। क्या करें भाई बड़ी उमस जो है। बात एक सप्ताह की करे तो इन दिनों शासन और प्रशासन पर उंगली उठाने की जिनकी हिम्मत नहीं है वो पत्रकारों को ही अपना शिकार बना आंख बंद कर भाला चला दे रहे हैं।

चलिए आपको घटनावार लोकतंत्र के चौथे स्तंभ को हिलाकर जड़ से उखाड़ फेंकने वाली कवायदों के बारे में बताता हूं। बीते दिनों एक महिला पत्रकार पौधरोपण कार्यक्रम में गयी थी वहीं एक कार्यकर्ता और विधायक के बीच झड़प हो गयी जो घटना काशी में सर्वविदित हो गयी। इसी दौरान बाहूबली बने कार्यकर्ता में पहले तो विधायक पर गाज निकाली और उसके बाद महिला पत्रकार को गाली देते हुए कैमरा बंद करने का फरमान दे दिया। इसके बाद एक और घटना घटी सूचना विभाग में। सूचना विभाग का सेखिया पहलवान बाहूबली क्लर्क अनिल श्रीवास्तव ने एक समाचार पत्र के संवाददाता के साथ भी जमकर बदसलूकी की। इतना ही नहीं जब अखबार के कार्यकारी संपादक ने अनिल से सूचना के आदान में उनका योगदान चाहा तो उन्हें भी बड़े बेतरतीब और गालियाना अंदाज में पटखनी दे दी। अभी ये वाकया दिनमान में ठंडा पड़ ही रहा था कि कांग्रेस की सर्व विदित पुत्री के सचिव ने एक न्यूज चैनल के रिपोर्टर नीतीश पांडेय के साथ तो हद ही कर दिया जीवंत कैमरे के सामने ही ठोक देने की धमकी देने लगा और रिपोर्टर को जानकारी भी दे दी की तुम तो बीजेपी से पैसा लेकर आये हो, तुम महारानी से कैसे बात कर सकते हो।

अब आपको टाइम मशीन द्वारा कुछ वक्त पीछे लेकर चलते हैं ये दौर है लोकसभा चुनाव प्रचार का। भारत के प्रधान सेवक के विरुद्ध सबसे बड़े दावेदार देश को अपनी जागीर समझने वाली पार्टी के प्रत्याशी के नामांकन के दौरान ई.टीवी के वरिष्ठ पत्रकार के साथ भी कार्यकर्ताओं ने जमकर बदसलूकी की, लेकिन जनाब उन्होंने थोड़ी शालीनता तब दिखायी जब कैमरे की निगाह उनकी ओर घूम गयी। ये सभी उपद्रवी दो पत्रकारों को उनकी औकाद दिखा देने पर तुले थे। कैमरा सामने आते ही सरपट नेता जी के कुर्ते में घुसने लगे।

बकौल पत्रकार और पत्रकारिता को धूल चटाने की मोक्ष समान इच्छा रखने वाले जाहिलों का मानना है कि अभी तो ये अंगड़ाई है आगे और लड़ाई है।

तन-मन-जीवन

स्वस्थ हृदय और आयुर्वेद

डा. साक्षी मिश्रा
वाराणसी
लेखिका डी.फार्मा (आयुर्वेद) लखनऊ विश्वविद्यालय एवं बी.ए.एम.एस (प्रशिक्षु) हैं

▣ जड़ी बूटियां दूर कर सकती हैं देह की हर बीमारी, हृदय के लिए भी है इनका विशेष फायदा

हृदय हमारे शरीर का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है, जो लगातार काम करता रहता है, इसलिए हमारे लिए इसे स्वस्थ रखना भी जरूरी होता है। आज–कल का रहन–सहन और गलत खान–पान हमारे हृदय को कई तरह से नुकसान पहुँचाता है, और इससे जुड़ी हुई समस्यायें बहुत ही आम होती जा रही हैं, इसमें दिल का दौरा, सीने में दर्द (एनजाइना), उच्च एवं निम्न रक्तचाप आदि प्रमुख कही जा सकती हैं। हृदय रोग सामान्यतः उन स्थितियों को सन्दर्भित करता है, जिनमें संकुचित या अवरुद्ध रक्त वाहिनियाँ होती हैं या इनमें खून के थक्के जम जाते हैं। आइए विस्तार से हृदयरोग के लक्षण एवं उसके बचाव के उपायों को समझते हैं–

हृदय से सम्बन्धित बिमारियों के लक्षण

अगर आप किसी भी घातक स्थिति से बचना चाहते हैं, तो सबसे पहले यदि आप किसी भी बिमारी के लक्षण को जान लेगें तो खतरा कम हो सकता है या टल भी सकता है

1&mPp jDrpki%& अगर सिस्टोलिक रक्तचाप (उच्चतम) 100–140 है तो सामान्य है इसके अधिक है तो यह उच्च रक्तचाप होता है। इसके शुरुआती लक्षणों के बारे में बात करें तो इसमें व्यक्ति के सिर के पीछे और गर्दन में दर्द रहता है, इस तरह की परेशानी हो तो इसे नजरअंदाज न करें।

1–उच्च रक्तचाप के लक्षणों में सिर चकराना एक आम समस्या है।

2–यदि आप को बहुत जल्दी गुस्सा आता हो, तनाव महसूस होता हो तो यह भी इसी का कारण हो सकता है।

3–अनिंद्रा (नींद न आना), थकान होना, हृदय की धड़कन का बढ़ जाना तथा दर्द महसूस होना आदि।

2&fuEu jDrpki%& यदि आपका ब्लड प्रेषर 90/60 या उससे भी कम है तो ये निम्न रक्तचाप है, इसके लक्षणों में चक्कर आना, कमजोरी लगना, थकान, तेज सासें, धुंधला दिखायी देना, अत्यधिक प्यास लगना आदि होता है।

3&gkV vVd& आप हार्ट अटैक

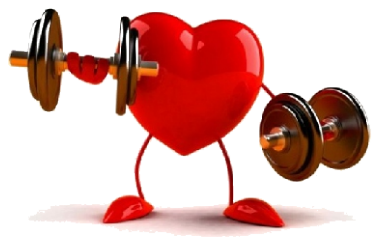

के शिकार कभी भी या अचानक से हो सकते है, लेकिन कई बार कुछ दिनों पहले से कुछ लक्षण नजर आने लगते है, इन पर ध्यान देना जरुरी होता है जैसे कि–

4&सीने में दबाव, जलन या कुछ असहजता का अनुभव होना।

5&पैर के पंजे, टखने और अन्य हिस्सों में सूजन।

6&थकान, चक्कर आना , साँस लेने में दिक्कत, लम्बे समय तक सर्दी बने रहना तथा बलगम आना आदि।

9&,utkbuk%&इसके लक्षणों में बेचैनी, छाती में दर्द, जलन, सीने में भारीपन महसूस होना, जकड़न तथा कभी–कभी इसका दर्द छाती के साथ–साथ कंधे, हाथ, गर्दन, जबड़े, गले के पीछे तक फैल जाता है।

आयुर्वेदिक औषधियाँ:–

1–अर्जुन की छालः– 2 चम्मच अर्जुन की छाल को 1 गिलास गर्म पानी में डालकर आधा होने तक उबालें फिर ठंडा होने पर खाली पेट ही पियें।

2–लौकी का जूसः– इसे भी आप खाली पेट ही या नाश्ते के आधे घंटे के बाद पी सकते हैं।

3–अलसी के बीजः– अलसी में ओमेगा–3 फैटी एसिड की अधिकता होती है, इसके इस्तेमाल से हृदय स्वस्थ रहता है।

4–दालचीनीः– यह हमारे शरीर में उपस्थित कोलेस्ट्राल को कम करता है, अतः इसका नियमित प्रयोग करें।

5–लहसुनः– इसके नियमित प्रयोग से कोलेस्ट्राल नियन्त्रित रहता है।

6–इलायची– इसका प्रयोग उच्चरक्तचाप के लिए अच्छा है।

हृदय को स्वस्थ रखने के सामान्य उपायः-

1–स्वस्थ हृदय में आहार बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, ऐसा आहार लें जिसमें फैट की मात्रा कम अथवा संतुलित हो।

2–अलकोहल का इस्तेमाल न करें।

3–सिगरेट, तम्बाकू, पान व मसाला आदि का सेवन बिल्कुल भी न करें।

4–अपने जीवन शैली में सकारात्मक परिवर्तन लायें।

5–योगासनः– धनुषासन, भुजंगासन, त्रिकोणासन, सेतुबंधासन व दंडासन इन सभी योगमुद्राओं के साथ शवासन भी काफी लाभदायक हैं। इनसे शरीर को आराम मिलता है।

इन सभी के साथ–साथ जो हमारे आयुर्वेद का प्रयोजन है–

"स्वस्थ स्वास्थ्यरक्षणं आतुरस्य विकारप्रशमनं च।" अर्थात स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के विकारों को शान्त करना जैसे सिद्धांत का पालन करते हुए हमें अपने स्वास्थ की रक्षा खुद करनी चाहिए।

संपादकीय.....

बार-बार प्रतिबंधित होती पत्रकारिता

पत्रकारिता पर इतिहास में लगी बंदिशें सही नहीं थीं, लेकिन विद्वानों का मानना है कि कश्मीर में धारा 370 हटाने के समय का प्रतिबंध सही है, क्योंकि वर्तमान पत्रकारिता में बहुत सारे मीडिया हाउस गैर राष्ट्रवादी ताकतों के हाथ में भी होने का भय है। प्रेस व सरकारों के इसी टकराव के निहितार्थ ढूंढ रहे हैं अनिवार्य प्रश्न के प्रधान संपादक –छतिश द्विवेदी 'कुंठित'

कहने के लिए वर्तमान समय में भारतीय प्रेस को व्यापक स्वतंत्रता प्राप्त है। संविधान में धारा 19 से 22 तक व्यक्ति के आजादी के पर्याप्त उपबंध हैं। जिसमें बोलने की आजादी भी है। जिसकी वजह से वरिष्ठ पत्रकारों तक का ये मानना है कि भारत में प्रेस की स्वतंत्रता का संवैधानिक उपबंध देश की रक्षा करता है।

हांलाकि भारतीय प्रेस के इतिहास का गहन अवलोकन इस बात को झूठा ठहरा देता है। समय 1975 के आपातकाल का रहा हो या वर्तमान दौर में वर्तमान सत्ता की धौंस, बार–बार प्रतिबंध लगता रहा है। प्रेस के प्रतिबंधित होने का मतलब है कि देश में या देश के कुछ हिस्सों में पत्रकारों के विचार–अभिव्यक्ति एवं संचारण पर पूर्ण या आंशिक रोक लगा दिया जाना। इंदिरा गांधी सरकार ने आपातकाल के दौरान प्रेस सेंसरशिप लगा दिया। इसे मार्च 1977 में आखिरी समय में हटाया गया। यह आपातकाल लगभग दो–तीन साल प्रेस को बांधे रखा। आगे के समय में भी प्रेस पर प्रतिबंध लगाया जाता रहा। अक्टूबर 2016 को श्रीनगर स्थित कश्मीरी अखबार 'कश्मीर रीडर' को जम्मू कश्मीर सरकार द्वारा प्रतिबंधित किया गया। कहा गया कि उक्त अखबार की सामग्री में वह तत्व शामिल हैं जिससे कि हिंसा को बढ़ावा मिल सकता है। प्रशासन ने यह बात दबाव पूर्वक कहा कि इस अखबार की प्रकाशित सामग्रियों से सार्वजनिक शांति व्यवस्था भंग हो जाएगी। पत्रकारिता का इतिहास भारत में वैसे भी बहुत दमनकारी रहा है। पत्रकारिता को अनेक बार कई कानूनी प्रतिबंधों से, कई बार सामरिक प्रतिबंधों से भी दबाया गया एवं इसका गला घोटा गया।

पत्रकारिता के विशेषज्ञ हमारे सारे वरिष्ठ साथी ईस्ट इंडिया कंपनी के उस गलाघोटू विधान को भूले नहीं होंगे जो पत्रकारिता के प्रारंभ में पत्रकारिता के भारतीय भविष्य की तस्वीर को जाहिर कर दिया था। हिक्की के बंगाल गजट को 1782 में प्रतिबंधित कर दिया गया था जो इसी बात को बताता रहा कि प्रेस का भविष्य भारत में कैसा होगा। उस समय बहुत सारे पत्रकारों को उनके अधिकारों से वंचित कर दिया गया और 1799 के समय में पत्रकारिता को विनियमित किया गया, छापने से पहले सरकार की अनुमति लेनी आवश्यक कर दी गई। सन् 1857 के विद्रोह के दौरान गैगिंग एक्ट पारित किया गया। जिसमें प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना एवं प्रकाशन को प्रतिबंधित करते हुए कुछ भी छापने से पहले सरकारी अनुमति लेने की बात कही गई। सभी पत्रों को सरकार से लाइसेंस लेना अनिवार्य कर दिया गया। कमोबेश लाइसेंस लेने और दबाने के लिए प्रक्रियाएं आज तक व्यवहार में हैं। साथ ही एक बार तो सरकार ने पत्रकारिता के बड़े मीडिया हाउसों में पारस्परिक विलय करा कर उनके सैद्धांतिक उत्थान को मिटाना चाहा। प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया और यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया को अंग्रेजी में और समाचार भारती एवं हिंदुस्तान समाचार जैसी हिंदी के मीडिया हाउसों को पारस्परिक विलय करने के लिए मजबूर किया गया। इसका उद्देश्य मात्र मीडिया को सूचना के प्रवाह के लिए नियंत्रित करना था। इन सारे प्रतिबंधों में दिल्ली एवं उसके आसपास के क्षेत्रों एवं कोलकाता के पत्रकारों का सबसे ज्यादा नुकसान हुआ।

भारत में आजाद पत्रकारिता की महत्ता को समझाते हुए महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि हमें अपने विचारों को प्रकाशित और प्रसारित करने के तरीकों को और अधिक विकसित करना चाहिए। जब तक पूरे प्रेस निर्भीक ना हो जाएं तब तक देश का जन–जन अपने अधिकारों को पा नहीं सकता। लेकिन आजादी के दशकों बाद अब राजनीति बदल गई। जवाहरलाल नेहरू से तुलना करते हुए इंदिरा गांधी ने एक बार यहाँ तक कह दिया कि मेरे पिता एक संत थे पर मैं राजनीतिक महिला हूं संत नहीं। मेरे सभी खेल राजनीति के खेल हैं। जरा सोचें क्या अपने सामान्य महत्वकांक्षा में भी पत्रकारिता को प्रतिबंधित करना चाहिए? वर्तमान समय में जब कश्मीर में पत्रकारिता पर आंशिक प्रतिबंध लगा है या लगाया गया तो पत्रकारिता के मनीषियों ने एक साथ इसका समर्थन एवं सहयोग किया। यहां तक कि कश्मीर में कार्यरत एवं पत्रकारिता की सेवा में लगे हमारे संवाददाता और छायाकार भी। सभी ने एक साथ एकजुटता दिखाई और आंशिक प्रतिबंध का स्वागत किया। जिसमें रिपोर्टिंग प्रतिबंधित नहीं थी सिर्फ प्रसारण रोका गया था।

भारत के इतिहास में पहली बार लगा कि पत्रकारिता पर भी प्रतिबंध लगने चाहिए। पत्रकारिता भी शांति व्यवस्था एवं सार्वजनिक हित के लिए कहीं न कहीं संकट खड़ा करने वाला तत्व बन सकती है। इसके पीछे एक कारण है कि पत्रकारों के सिद्धांतों का एवं उनके क्रियाओं का ना ही नियमन किया गया ना ही विशेष कार्यशालाएँ आयोजित हुई। बहुत सारे अखबार, दूरदर्शन और रेडियो समूह ऐसे हाथों में भी हो सकते हैं जो राष्ट्रवादी नहीं हैं। गॉसिप्स, सेक्स की स्टोरीज, बकवास दर्शन, अश्लील सामग्रियाँ, धर्म भ्रान्तियां, अंधविश्वास प्रेरक मसाले व चरमपंथी आलेख आदि का प्रकाशन एवं प्रसारण इसके प्रमाण हैं। ऐसी शक्तियां जो राष्ट्रवाद, भारतीय मूल धारा एवं संस्कृति की चिंतक नहीं हैं वह संपूर्ण राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा हैं। यहाँ तक कि वर्तमान में जो मतभेद एवं वैचारिक संघर्षों का फैलाव देखा जा रहा है वह सभी उन विघटनकारी और गैर–राष्ट्रवादी पत्रकारिता समूह के द्वारा ही फैलाया गया छद्म है। हालांकि नियंत्रण पहले से कठोर हुए हैं। 2008 से पहले भारत सरकार द्वारा इंटरनेट सामग्री की सेंसरशिप अपेक्षाकृत कम और छिटपुट थी। नवंबर 2008 में मुंबई में आतंकी हमलों के बाद जिसमें भारी जन धन का नुकसान हुआ, भारतीय संसद ने सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम में संशोधन बिल पारित किया। इस बिल ने सरकार की सेंसरशिप और निगरानी क्षमताओं को बढ़ा दिया। लेकिन बड़े पैमाने पर इंटरनेट सामग्री तक पहुंचना एवं उसे रद्द करने के लिए निरंतर सरकार ना ही समर्थ है ना ही उसके पास कोई व्यापक रणनीति है। हाँ कभी–कभार कठोर कार्यवाही होती दिखाई पड़ती है। 2009 में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि वेबसाइटों पर पोस्ट की गई टिप्पणी के लिए मानहानि के मुकदमें और यहां तक कि आपराधिक मुकदमों का सामना करना पड़ सकता है, तब से कुछ डर का माहौल बढ़ा है।

राष्ट्रवादी कारणों से या सार्थक कारणों से पत्रकारिता में खासकर जो राष्ट्रवादी व जनसमर्थक नहीं हैं उनके ऊपर प्रतिबंध होना चाहिए। उस समय तो प्रतिबंध अवश्य लगना चाहिए जिस समय राष्ट्रीय सुरक्षा, उसकी अखंडता एवं उसकी एकजुटता पर संकट दिखाई दे। वर्तमान सरकार का गैर–राष्ट्रवादी शक्तियों के संशय में लगाया गया कश्मीर क्षेत्र में पत्रकारिता पर आंशिक प्रतिबंध पहली बार श्रेष्ठ प्रतिबंध था।

हालांकि इसके पहले इसी सरकार में लगाये गये पत्रकारिता के एक समूह पर दूसरे तरह के प्रतिबंध गैरजरूरी थे। आपको जानना चाहिए कि सरकार को मीडिया को प्रतिबंधित करने की कुछ संवैधानिक शक्तियां मिली हुई हैं। जिसकी लगभग 8 श्रेणियां प्रमुख मानी जाती हैं। भारत की संप्रभुता व अखंडता, राज्य की सुरक्षा, विदेशी राज्यों के साथ महत्वपूर्ण संबंध, सार्वजनिक व्यवस्था, शालीनता, नैतिकता, न्यायालय की अवमानना और उत्पीड़न के संबंध में सरकार मीडिया पर प्रतिबंध लगा सकती है।

चिंता की बात यह है कि हमारे चौथे स्तंभ के विद्वान पत्रकारजन यह क्यों नहीं समझ पाते कि कौन से विषय को प्रकाशित करना राष्ट्रीय हितों के लिए ठीक नहीं है। यहां ऐसी शक्तियों के विकास को रोकना होगा जो राष्ट्र को भाषिक, सैद्धांतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रूप से तोड़ने का काम करती हैं। वह चाहे पत्रकारिता के समूह हों, न्यायालय के नियम पारित करने के अनुभाग या स्वयं कानून बनाने वाली विधायिका से जुड़े समूह। सबको प्रतिबंधित करना होगा। यह प्रतिबंध समाज की दृष्टि में नाजायज कभी नहीं ठहराए जाएंगे। इन्हें जरूरी समझा जाएगा और हमारे सभ्य समाज में इसे ठीक समझा जाता रहा है। इस तरह के प्रतिबंध लगने चाहिए। वह चाहे व्यक्ति हो संस्था हो या संस्था की कोई व्यवस्था हो। सबसे बड़ा राष्ट्र है और उससे भी बड़ा राष्ट्रहित है।

कई चुनौतियों का सामना कर रहा शहर बनारस

सुरेन्द्र सिंह
वर्तमान जिलाधिकारी, वाराणसी

'शहर की तीन प्रमुख चुनौतियों से लड़ने के लिए सामाजिक संगठनों के जागरण कार्यक्रम और नागरिकों के सकारात्मक सहयोग को आवश्यक मान रहे हैं वाराणसी के वर्तमान जिलाधिकारी सुरेन्द्र सिंह

समाज सेवी संगठनों द्वारा सम्मान कार्यक्रम में सम्मानित होने के बाद धन्यवाद व संदेश उद्बोधन परिष्कृत कर लेख का निरुपण किया है। साभार जिलाधिकारी

लोगों की अपेक्षाएं सरकार से काफी बढ़ गई हैं। विभिन्न परीक्षाओं, विभिन्न सेवायोजन कार्यक्रमों के माध्यम से चाहे राजनीतिक प्रक्रियाएं हों या प्रशासनिक गतिविधि सभी के संचालन से हम नागरिकों की अपेक्षाओं एवं उनकी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही प्रयासरत हैं।

अपना शहर तीन–चार प्रकार की प्रमुख चुनौतियों का सामना कर रहा है। यहां हर व्यक्ति को स्वच्छता अपनाते नहीं पाया गया। जबकि उसे जरा सा ध्यान देना होगा और अपने जीवन में 1 से 2 मिनट सहज स्वच्छता अपनानी होगी फिर पूरा समाज साफ हो सकता है।

एक वार्ड में एक से दो सफाई कर्मी अगर दिनभर साफ करें तब भी समूचे वार्ड की पूरी सफाई नहीं हो सकती। लेकिन अगर प्रत्येक व्यक्ति अपनी जीवनशैली में बस इतना खयाल करे कि आते–जाते खाते–पीते सामानों के रैपर और सामान्य कूड़े को एक जगह इकट्ठा करे, घर से बाहर नौकरी या किसी और काम से जाते समय अपने निकट के कूड़ा निस्तारण केंद्र तक लाकर छोड़ दे तो स्वच्छता को बड़ा सहारा मिल जाएगा।

अपना पूरा शहर साफ व सुन्दर हो जाएगा। एक आदमी अगर ऐसा करे तो उसके हिस्से में स्वच्छता का बहुत छोटा भाग आएगा, लेकिन अगर समूचे लोग निष्क्रिय हो जाएं और कूड़ा साफ करने का देश भर का सारा भार सिर्फ एक ही आदमी को दे दिया जाए तो वह पूरा कर नहीं सकता। हम सभी को अपने जीवन में थोड़ा समय निकालकर आदरणीय मोदी जी के स्वच्छता अभियान में समर्थन व सहयोग देना चाहिए।

हमारा शहर दूसरी सबसे बड़ी जिस चुनौती का सामना कर रहा है वह है पेयजल की समस्या। लगभग 3000 से ज्यादा हैण्डपंप रिबोर के लिए पड़े हुए हैं। उनके रिबोर का मतलब होता है एक जगह से निकाल कर दूसरी जगह भूगर्भीक जल स्रोत के लिए नए जलकूप की तरह स्थापित करना। इसमें बड़ा खर्च आता है। बरसात से आने वाला जल इतना शुद्ध होता है कि अगर समाज रेन वाटर हार्वेस्टिंग (वर्षा जल संचयन) को सही रूप में अपना लेता तो पानी संकट का समाधान मिल जाता।

10 फिट लंबे और 30 फीट चौड़े छत पर लाखों लीटर पानी बरसता है, जो पूरी तरह आसुत होता है। यह शुद्ध जल बरबाद हो जाता है। नालियों के रास्ते से नदियों व तालाबों आदि में मिलकर दूषित हो जाता है। हम उसे कई और दूसरे रूपों में बरबाद होते देखते हैं। फिर उसे आधुनिक मशीनों सें शुद्ध करते हैं, और पीने तथा उपयोग के लायक बनाते हैं। सोचिए एक शुद्ध जल को प्राप्त करने के पश्चात उसकी कद्र न करके हम उसे पहले दूषित करते हैं फिर उसके शुद्धिकरण के पश्चात उसका उपयोग करते हैं।

यह हमारी भूल ही है समझदारी तो कतई नहीं। हम अगर अपने छतों पर उतरने वाले बरसात के पानी के स्टोर का सही इंतजाम कर लें तो एक सार्थक पहल हो सकती है। इसके लिए हमें अपने घरों में टैंक बनाना चाहिए, अगर जगह कम है तो रिबोर होने के लिए उखाड़ी गई पाईप की छेद से कई आसपास की छतों के वर्षा जल निकासी पाईपलाइन को जोड़ दें। इससे बहुत सारा पानी पुरानी नल छेद से भूगर्भ में चला जाएगा। इस प्रकार हजारों नलों की छेदों से जमीन के भीतर जाने वाले पानी का आयतन लाखों–करोड़ों लीटर का होगा, जो शहर के सारे नलकूपों को जीवित कर देगा। यह एक चमत्कार जैसा हो सकता है। इस पद्धति को सिर्फ सरकार अपनाएगी तो सफल नहीं हो पाएगी। इसे हम नागरिकों को भी अपना दायित्व समझकर अपनाना होगा तब यह अभियान सफल हो पाएगा।

तीसरी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हम वृक्षों को तेजी से काट तो दिए हैं पर वृक्षारोपण के लिए उतनी तेजी से प्रयास नहीं किए हैं। आते–जाते, चलते– फिरते भी हम वृक्षों को या लगाए गए नए पौधों को जिनसे हमारा कोई दुराग्रह नहीं होता, सिर्फ मौज मस्ती करते हुए उखाड़ देते हैं। हम सभी नागरिकों को यह समझना होगा कि जो हमें मानसून, हमारे जीवन के लिए उर्जा, उष्मा एवं अनेक उपयुक्त विकल्प देते हैं, उसे सींचना चाहिए। इनकी देखभाल करनी चाहिए।

अपने सुन्दर जनपद के जागरुक नागरिकों से कहूंगा कि आप सब सरकारी योजनाओं को व संचालन केंद्रों को जैसे कि विद्यालय और अन्य सरकारी केंद्र उनके हाल पर छोड़ न दें बल्कि उनकी योजनाओं और क्रियान्वयन में उनकी सहायता करें ताकि विकास योजनाओं को और अधिक गति मिले। साथ ही समय–समय पर जांच–पड़ताल भी करें इससे संस्थानों के अनियमितता एवं कार्य शिथिलता पर अंकुश लगेगा।

मेरे प्रशासन में सहयोग व मेरे नीजी सम्मान के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं पत्रकारिता के संस्थानों का मैं कृतज्ञ रहूँगा। सेवा में जुटे रहने के लिए आप सबका धन्यवाद एवं आभार है।

रंगमंच जिंदगी जीने का अद्भुत तरीका

उमाशंकर मिश्रा, रंगकर्मी

उमाशंकर मिश्रा, एक ऐसा रंगकर्मी जो वैसे तो है आम आदमी लेकिन उसकी आत्मा में रंगकर्म ही रचा बसा है!

भरत मुनी द्वारा रचित नाट्य शास्त्र पर आधारित रंगमंच की विधा जिसका बोलबाला तो काफी है लेकिन हमारा समाज रंगमंच को आज भी कुछ कम आंकता है, लेकिन इसी रंगमंच से सिनेमा, धारावाहिक निकल कर आये हैं। इन लोगों ने बड़े-बड़े कीर्तिमान बनाए हैं। इसी रंगमंच को लेकर कुछ सवाल उठते हैं जिनका जवाब देने के लिए हमने बात की उनसे जो रंगमंच को ही जीते हैं। फिल्म, टीवी सिरियल्स के लिए भी काम कर चुके हैं, लेकिन उनका अनन्य प्रेम रंग मंच से ही है और वह खुद को रंगकर्मी नहीं बल्की रंग सेवक कहते हैं। एक खास मुलाकात रंग मंच सेवक उमाशंकर मिश्रा से-

> आगरा के केशव प्रसाद सिंह ने केंद्र सरकार को एक प्रस्ताव भेजा है कि रंगकर्म को शिक्षा के पाठ्यक्रम में लाया जाए। उनके अनुसार शिक्षा में रंगमंचीय गतिविधियां बढ़नी चाहिए।

jxeap D;k gS

सबसे पहले मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूं, मेरा ये सौभाग्य है ताज नगरी से काशी नगरी में आने का।

सही मायनों में देखा जाए तो पूरी दुनिया ही रंगमंच है, सभी अपना-अपना किरदार निभा रहे हैं। रंगमंच के साथ मेरा जो अनुभव रहा है कि रंगमंच वास्तविक जीवन जीने की शैली को दर्शाता है। इससे जो भी जुड़ेगा वह जीना सीख जाएगा। रंगमंच पर जब भी कोई कलाकार पहली बार आता है तो वह रंगकर्मी कहलाता है और रंगमंच उसे आत्मविश्वास के साथ मंच पर खड़ा होना सीखाती है।

उसके बोलने का तरीका उच्चारण, पंक्चुएशन, डिक्शन इन सभी में सुधार आता है, लेकिन इससे पहले वह इसके बारे में कुछ जानता भी नहीं होगा। रंगमंच आपकों निरंतरता देती है और आप जब किसी भी कार्य को निरंतर करते रहेंगे तो उसमें निखार आयेगा ही आयेगा। निरंतरता बनी रहेगी तो ये क्या किसी भी क्षेत्र में अगर आप है तो आप बेहतर ही रहेंगे।

रंगमंच की और भी कई खूबिया हैं आपने देखा होगा कलाकार एक शब्द है जो बड़ा सामान्य सा शब्द है जैसे कोई संगीत का कलाकार, कोई पेंटिग अच्छी बनाता है उसे भी कलाकार कहते है। लेकिन जहा तक रंगमंच के कलाकारों की बात है जिसे रंगकर्मी कहते हैं उन्हें रंगकर्मी क्यों कहते हैं? मेरा जो मानना है उसमें थोड़ा मतभेद भी है। रंगकर्मी और कलाकार में फर्क है कला तो कई तरह की होती लेकिन रंगकर्मी इससे अलग होता है और रंगकर्मी बड़ा व्यापक शब्द है। मैं तो अभी भी सीख रहा हूं इसलिए मैं खुद को रंग सेवक कहता हूं।

loky ;g gS fd vki [kqn dks jx lsod dgrs gS ;s dgs eknh th lsçfjr rks ugha

हाहाहा! नहीं ऐसा कुछ नहीं है मोदी जी देश के प्रधानमंत्री हैं ये तो उनका बड़प्पन है जो वह खुद को सेवक कहते हैं। मेरे हिसाब से रंगकर्मी वो है जिसे हर विधा का बेसिक ज्ञान हो, विभिन्न रंग का ज्ञान हो। रंगमंच पर आपको अलग-अलग किरदार निभाने होते हैं तो हर किरदार के बारे में जानकारी होनी चाहिए। जैसे आपके शहर के बिसमिल्ला खान साहब जो अपने फन के माहिर थे। एक रंगकर्मी को हर किरदार की जानकारी होना जरूरी है, उसे नाचना भी आना चाहिए, उसे गाना भी आना चाहिए और भी बहुत कुछ।

vkiu jxeap ij dkQh oä fcrk;k gS bl ds lkFk gh vki fQYe vkSj Vhoh fl jh;y esa Hkh dke fd;s gS vki bues dgk vkSj D;k vrj ikrs gS

देखिये अपने आपको अभिनय के क्षेत्र में सिद्ध करना हो तो माध्यम सिर्फ रंगमंच है क्योंकि वहां रीटेक नहीं है। आप अच्छा कर रहे हैं तो सामने दर्शक हैं ताली बजाएंगे, वर्ना उपहास भी होगा, लेकिन फिल्मों में तो रीटेक होते हैं।

jxeap dk vFk'kkL= dkQh [kjkc gS] bl ds fy, ,s lk D;k gksuk pkfg, fd lq/kkj gks

ये बड़ा विचारणीय प्रश्न है। मैं आपका इशारा समझ रहा हूं। दो तरह के रंगकर्मी हैं, व्यावसायिक रंग-कर्म और अव्यावसायिक रंग-कर्म है। व्यावसायिक रंगकर्म में पैसा बहुत है। आप मुंबई के पृथ्वी थियेटर को देख सकते हैं। वहां पर अगर मुझे अपनी संस्था का प्ले कराना है तो उसकी बुकिंग करने के लिए आपको एक साल का समय चाहिए। उस थियेटर में कोई भी नाटक चल रहा हो और वहीं सामने कोई बड़े स्टार की फिल्म चल रही हो तो लोग पृथ्वी थियेटर का रुख करते हैं।

ysfdu ;s pht flQ ,d gh txg ij lhfer gS ijUrq Hkkjr esa ,s lk D;k ugha\ bl ds c<+kok D;k ugha feyk] D;k jxdeh viuh ckr ugha igqpk ik jgs gS ;k ykx bl ds de ikln dj jgs gS

देखिये लोग इसे पसंद तो कर रहे हैं लेकिन इसका व्यावसायिकरण नहीं हो पा रहा है। इसका एक कारण शहर के अलावा गांव में भी राजनैतिक पार्टियां इन कलाकारों का इस्तेमाल करती हैं। इसमें खासकर उनका जो नुक्कड नाटक से जुड़े हैं। रंगकर्म तो बढ़ रहा है पर व्यावसायिकरण नहीं हो रहा है जिससे कलाकार को पैसा मिले।

dgha ,s lk rks ugha fd tks dykdkj fFk;sVj vkSj uqDdM+ fo/kk ls tqM+s gS lekt mlds vgfe;r de le> jgk gS

देखिये ऐसा नहीं है कि लोग कलाकार की अहमियत कम समझते हैं। अगर ऐसा होता तो लोग हमें बुलाते क्यों? आयोजक भी रंगकर्म की संस्था को सम्मान स्वरूप धन देते हैं लेकिन वह काफी नहीं होता है। मैं एक अव्यावसायिक रंगकर्म संस्था का प्रतिनिधित्व करता हूं। मुझे रंग कर्म करना है तो मुझे लोगों में ललक डालनी होगी और प्रस्तुति अच्छी होनी चाहिए। तब दर्शक जरूर आयेगा। इसके बाद आप कुछ टिकट लगा सकते हैं। लेकिन अगर आपने पहला नाटक ही अधकचरा दिखा दिया तो अगला आप कितना भी अच्छा नाटक कर लें दर्शक आपको देखने नहीं आयेगा।

f'k{kk esa fofHkUu çdkj dh dykvksa dks tks lqxhr] xk;u vkfn dks ikBîØe esa 'kkfey fd;k x;k gS] yfdu jxdeh dks ugha fd;k x;k gS] D;k bl ds fy, dksbZ igy ljdkj dh vksj ls dh tk jgh gS

सरकार की ओर से तो नहीं लेकिन रंगकर्म की ओर से की जा रही है। आगरा के हैं एक केशव प्रसाद सिंह जी। उन्होंने केंद्र सरकार को एक प्रस्ताव भेजा है कि रंगकर्म को पाठ्यक्रम में लाया जाए। शिक्षा में रंगमंचीय गतिविधियां बढ़नी चाहिए। अब देखिये पीजी लेवल तक संगीत है पेंटिग भी, नृत्य भी है। लेकिन नाटक को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए तो ये सारी विधाएं इसमें शामिल हो जाएंगी। नाटक में आपको संगीत भी चाहिए, चित्रकारी भी चाहिए तो इसमें सारी चीजों का समावेश है। इसिलिए भरत मुनी के नाट्य शास्त्र को पंचम वेद की संज्ञा दी गयी है।

मौत का खेल

एस.जी.एस. सिसोदिया
गुलाबी बाग, दिल्ली–110007

अंकुर की मरहम-पट्टी करके दवाइयाँ लिख दी गयीं और उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। उसे पूरी तरह ठीक होने में एक सप्ताह लग गया। लेकिन शर्मा जी ने ...

''मम्मी, मैं खेलने जा रहा हूँ, ओके बाय!" अंकुर ने दूध का गिलास सिंक में फेंकते हुए कहा और दरवाजा खोल कर बिना अपनी माँ के उत्तर की प्रतीक्षा किये घर से बाहर भाग गया।

"अरे! अपने पापा के घर आने से पहले जरूर आ जाना, वरना वे बहुत गुस्सा होंगे!" अंदर से सुमन ने बाहर भागते अपने पुत्र को लगभग चिल्लाते हुए हिदायत दी। परन्तु सुमन की आवाज जैसे अंकुर ने सुनी ही नहीं। वह तो अपने मित्रों की ओर भागा जा रहा था। वह सोच रहा था कि आज भी उसके साथी उसका मजाक बनाएंगे कि वह तो लड़कियों की तरह घर में ही घुसा रहता है। वह हाँफता हुआ कॉलोनी के पार्क में पहुँच गया। उसे यह देख कर अपार खुशी हुई कि आज वह अपने साथियों में सबसे पहले पहुँचा था। वह उनकी प्रतीक्षा करने लगा। तभी उसे सामने से आता हुआ गौरव दिखाई दिया। आज अंकुर की बारी थी। उसने ऊँची आवाज में गौरव को लक्ष्य करके कहा, "अबे यार, मैं कब से तुम लोगों का वेट कर रहा हूँ और वह गोलू कहाँ है?" "अच्छा बेटा, आज जल्दी आ गया तो इतना इतरा रहा है! अभी तो चार भी नहीं बजे। वह देख गोलू भी आ गया।" गौरव ने नजदीक पहुँचते हुए उत्तर दिया। "अबे, आज तो ढीलू भी टाइम पर आ गया", दूर से ही गोलू ने हँसते हुए चुटकी ली।

दरअसल अंकुर को उसके साथी इसी नाम से पुकारते थे। कारण यह था कि वह समय पर कभी नहीं पहुँचता था। जब उसके पापा घर पर होते थे, तब तो उसका घर से निकलना ही नहीं हो पाता था। यदि वे उसे बुलाने जाते तो अंकुर के पापा, शर्मा जी, उन्हें ही डाँट कर भगा दिया करते थे। कुछ ही देर में वे सारे इकट्ठे हो गये और क्रिकेट खेलने लगे। गोलू बल्लेबाजी कर रहा था और सुमित गेंदबाजी। अंकुर बाउन्ड्री बचाने के लिए सीमा रेखा पर तैनात था। गोलू ने सुमित की एक ढीली गेंद को उछाल दिया। अंकुर ने हवा में डाईव लगाते हुए गेंद को

> **"कांग्रेचुलेशन अंकुर! आज तुम्हारी बारी है। जाओ और खुद को फाँसी लगा कर खत्म कर दो!" अंकुर ने उत्तर में लिखा था, "ओके गाइज, आई ऐम गोइंग टू डाई। गुडबाय !"**

लपकना चाहा, किंतु वह गेंद तक नहीं पहुँच सका और पार्क की रेलिंग पर जा गिरा। रेलिंग की नुकीली सलाखों ने उसके शरीर को लहुलुहान कर दिया। सभी लोग इकट्ठे हो गये। बच्चे अंकुर की छाती और गर्दन से रक्त बहता देख कर घबरा गये। तभी कुछ सज्जन पुरुष जो पार्क में मौजूद थे, वहाँ पहुँच गये और तत्काल अंकुर को उठा कर अस्पताल ले गये और अंकुर के घर खबर भिजवा दी। शर्मा जी भी अपने दफ्तर से तुरंत अस्पताल पहुँच गये और घर से सुमन भी।

अंकुर की मरहम–पट्टी करके दवाइयाँ लिख दी गयीं और उसे अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। उसे पूरी तरह ठीक होने में एक सप्ताह लग गया। लेकिन शर्मा जी ने पुत्र तथा पत्नी सुमन को सख्त हिदायत दी कि अब से अंकुर का बाहर जाना बिल्कुल बंद है। हालाँकि सुमन ने पति को बहुत समझाया कि खेलकूद में बच्चों को चोट तो लगती ही रहती है, पर शर्मा जी पर सुमन के समझाने का कोई असर न हुआ, उलटे सुमन को ही चार बातें सुननी पड़ीं।

अगले दिन शर्मा जी पुत्र के लिए लैपटॉप तथा महंगा मोबाइल ले आए। उन्होंने उसे ये उपकरण देते हुए कहा, "ले, मैंने तेरे लिए घर में ही खेलने का प्रबन्ध कर दिया है, अब से बाहर जा कर उन आवारा लड़कों के साथ खेलने की जरूरत नहीं है, समझे!" अंकुर पहलेपहल उपकरणों को देखकर चहक उठा था, लेकिन पापा की शर्त सुनकर उसका दिल बुझ गया। खुले गगन में उन्मुक्त उड़ान भरने वाले पंछी को सोने के पिंजरे में कैद कर दिया गया था। आखिरकार अंकुर को हालात से समझौता करना पड़ा। उसे भी अब मोबाइल तथा लैपटॉप पर गेम खेलने में आनंद आने लगा। कुछ दिन तक उसे बहुत छटपटाहट महसूस हुई, किंतु कुछ दिन बाद उसकी दुनिया ही इंटरनेट हो गया। अब वह विद्यालय से आते ही गेम खेलने बैठ जाता और फिर उठने का नाम न लेता। उसे इतना भी होश न रहता कि गृहकार्य भी करना है। विद्यालय से अब उसकी शिकायतें आने लगीं थीं। अभी तक प्रत्येक विषय की परीक्षा में वह अव्वल आया करता था, लेकिन अब उससे सभी अध्यापक परेशान रहने लगे थे। लगभग प्रतिदिन ही विद्यालय के किसी–न–किसी अध्यापक का सुमन के पास फोन आया करता। उसके पश्चात् सुमन विद्यालय जाती और अध्यापकों तथा प्रधानाचार्य की डाँट खाकर लौट आती। वह करती भी क्या, अंकुर को वह समझा–समझा कर थक चुकी थी, परन्तु उस पर अब कहने का कोई असर होता ही नहीं था। वह सुमन की बात एक कान से सुनता और दूसरे से निकाल देता। उसके पास उसकी बात सुनने का समय ही कहाँ था। वह तो हर समय मोबाइल अथवा लैपटॉप पर लगा रहता। कानों में इयरफोन ठूसा रहता और आँखों के सामने स्क्रीन। उसके इंटरनेट गेम की दीवानगी का आलम ये हो गया कि वह खाना–पीना सब कुछ गेम खेलते हुए ही करता। सुमन शर्मा जी से उसकी शिकायत करती तो वह यह कह कर टाल जाते कि बच्चे ऐसा करते ही रहते हैं। कुछ दिनों बाद हालत यह हो गयी कि उसे पेशाब आ रहा होता, पर वह न उठता और उसके कपड़े गीले हो जाते। सुमन बहुत चिंतित थी अपने पुत्र की इस दशा को देख कर, पर वह बेचारी क्या करती, शर्मा जी उसकी एक न सुनते थे। उसने चोरी–छुपे एक–दो बार मनोचिकित्सकों से भी सम्पर्क किया, जिन्होंने अंकुर की हालत बहुत चिंताजनक बतायी। जब सुमन ने पति को इस विषय में शीघ्र कुछ करने के लिए कहा तो वे उस पर बहुत बिगड़े। कहने लगे, "सुमन, मुझे लगता है कि तुम मुझे समाज में उठने–बैठने लायक भी नहीं छोड़ोगी। क्या तुम जानती नहीं कि मेरी समाज में क्या पोजीशन है? यदि अंकुर को मनोचिकित्सक के पास दिखाने ले गये तो लोग क्या कहेंगे? वे समझेंगे कि शर्मा जी का बेटा पागल है। क्या तुम चाहती हो कि हमारे बेटे को लोग पागल कहें? तुम ने तो तिल का ताड़ बना डाला। वह मेरा बेटा है, एकदम स्वस्थ और तन्दुरुस्त समझी! अब से इस तरह की ऊट–पटांग बातें मेरे सामने कभी मत करना, वरना मुझ से बुरा कोई नहीं होगा।"

एक दिन की बात है। अंकुर विद्यालय से घर आ गया था। उसने माँ द्वारा दिया भोजन गेम खेलते हुए ही किया। उसके पश्चात् सुमन सब्जियाँ लेने के लिए बाजर चली गयी। लेकिन जब लौटी तो उसकी आँखें फटी रह गयीं। वह दहाड़ें मार कर रो पड़ी। उसकी चीखों ने घर ही नहीं पूरे मोहल्ले को हिला कर रख दिया। पल भर में ही आसपास के महिला–पुरुषों से पूरा घर भर गया। अंकुर ने स्वयं को फाँसी लगा ली थी और मोबाइल पर एक गेम की विन्डो खुली हुई थी, जिस पर लिखा था,

"कॉग्रेचुलेशन अंकुर! आज तुम्हारी बारी है। जाओ और खुद को फाँसी लगा कर खत्म कर दो!" अंकुर ने उत्तर में लिखा था, "ओके गाइज, आई ऐम गोइंग टू डाई। गुडबाय !"

जिला राजकीय पुस्तकालय की बदल गयी सूरत

- प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्रों के लिए उचित सुविधाएं
- आठ हजार से अधित पुस्तकें हैं उपलब्ध,
- पांच सौ रुपये आजीवन सदस्यता शुल्क

वाराणसी। जहाँ एक ओर डिजिटलाइजेशन का दौर अपने शबाब पर है वहीं पुस्तकों का भी अपना एक अलग महत्व भी है। इसकी एक बानगी देखने को मिलती है वाराणसी के अर्दली बाजार स्थित राजकीय पुस्तकालय में, जहां पुस्तक प्रेमियों की अपार भीड़ इस मिथक को तोड़ रही है कि तकनीक ने किताबों को पीछे छोड़ दिया है।

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जिला राजकीय पुस्तकालय की स्थापना एलटी कालेज अर्दली बाजार के प्रांगण में सन 1954 में की गयी थी। इस पुस्तकालय का संचालन मध्यमिक शिक्षा विभाग के द्वारा होता है। जिसका उदेश्य पुस्तक प्रेमियों को निःशुल्क साहित्यिक व ज्ञानवर्धक पुस्तकें उपलब्ध कराना रहा है। इस पुस्तकालय में बड़े–बड़े दार्शनिक व साहित्यकार भी आकर अध्ययन का लाभ लेते थे। लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता गया और तकनीक ने अपने पैर पसारे तो पुस्तकालय भी बीते दिनों की धरोहर का रूप लेने लगा और यहां कि पुस्तकों से लोग दूर होते चले गये। स्थिति यहाँ तक आ गई थी कि न कोई नवीन पुस्तक न ही कोई समुचित व्यवस्था रह गई थी। किसी तरह एक सरकारी उपक्रम होने के नाते यह सुसुप्त अवस्था मे चली गयी थी। लेकिन कहते है सबका दिन एक बार जरूर लौटता है और हुआ भी यही। जब से इस पुस्तकालय की कमान नए पुस्तकालय अध्यक्ष कंचन सिंह परिहार के हाथों में आई तो उन्होंने इस पुस्तकालय की रौनक लौटाने का बीड़ा उठाया। अपने अथक प्रयास से पुस्तकालय में आमूलचूल परिवर्तन किया और इसे संवारने में जुट गये। समय–समय पर नवीन पुस्तकों को मंगाना, साफ सफाई, पीने के पानी, बैठने की समुचित व्यवस्था, इन्वर्टर, कम्प्यूटर, इंटरनेट की व्यवस्था करायी। इसके बाद पुस्तकालय अध्यक्ष ने इस पूरी व्यवस्था का लाभ उठाने वालों को इस पुस्तकालय से जोड़ने का प्रयास शुरू किया। सबसे बड़ी बात पढ़ने वाले बच्चों से सामंजस्य स्थापित कर के उनकी समस्या को सुनना व उसे दूर करने का भरसक प्रयास किया।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का बना गढ़

कुछ वक्त पहले जहां किताबे धूल फांकती थी आज वहां इन पुस्तकों के साथ लोग दोस्ती कर रहे हैं। इस पुस्तकालय की सफलता ये है कि यहां बहुत से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले बच्चे आते हैं और सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक सप्ताह के सातों दिन यहां अपनी तैयारी में जुटे रहते हैं। वर्तमान अध्यक्ष के पहले यह पुस्तकालय मात्र 3 से 5 बजे तक ही खुला रहता था और साप्ताहिक बन्दी भी होती थी। यह सुविधा बच्चों की रुचि और भविष्य को ध्यान में रख कर की गयी है। यहां आकर पढ़ने वाले बहुत से छात्र आज कई प्रतियोगी परीक्षाओं को पास कर उच्च पदों पर पहुंच चुके हैं। पुस्तकालय की आजीवन सदस्यता 500 रुपये रखी गयी है। प्रत्येक सदस्य दो पुस्तकों का आवंटन करा सकते हैं। जैसे–जैसे पुस्तकालय की व्यवस्था सुधरती गई वैसे वैसे पुनः सदस्यों की संख्या भी बढ़ने लगी। आज नए सदस्यों को संख्या 900 के ऊपर हो गई है जबकि यहाँ बैठने के लिए 70 सीट ही उपलब्ध है और छोटे बच्चों के लिए भी 40 सीट अलग से है। पुस्तकालय में 10 कम्प्यूटर इंटरनेट सेवा के साथ उपलब्ध है।

पुस्तकालय अध्यक्ष ने बताया कि यहां पर फिलहाल आठ हजार से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। सदस्यों की संख्या जैसे–जैसे बढ़ रही है उसे देखते हुए एक बड़े सभगार का निर्माण भी कराया जा रहा है। इसके साथ ही पुस्तकालय के लिए आवश्यकता अनुसार सुविधाओं में इजाफा किया जा रहा है।

माह का बिम्ब : गंगा जल जो चाहे पी ले, मजहब पहरेदार कहां है!

मुक्तक

शिब्बी ममगाई, वाराणसी

सबको संवारते रहे हम खुद बिखर गए।
अपने जो साथ थे कभी, जाने किधर गए।
कोई गुनाह की नहीं फिर भी सजा मिली,
जाने क्या है नसीब में यह सोच डर गए।।

बंजर धरती पर हरियाली होती नहीं।
पत्थरों पर कभी फूल खिलते नहीं।
हर किसी के लिए दिल पिघलता नहीं,
हर कहीं अश्क आंखों से ढलते नहीं।।

लेखिका वाराणसी की निवासी हैं और उद्गार संगठन से सक्रिय रुप से जुड़ी हैं। संगठन से प्रकाशित होने जा रहे काशी प्रांत कोश की सूचना संपादक हैं।

ग़ज़ल

डा. नशीमा ' निशा ', वाराणसी

देखो तो दीवार कहाँ है,
दो धारी तलवार कहाँ है।

तुम भी इंसा, हम भी इंसा,
सोचो तो तकरार कहाँ है।

गंगा–जल जो चाहे पी ले,
मजहब पहरेदार कहाँ है।

साथ जियेंगे, साथ मरेंगे,
बोलो वो इकरार कहाँ है।

एक फलक है एक जमी है,
हमको भी इंकार कहाँ है।

हाथ पकड गर साथ चले तो,
फिर मन्जिल दुश्वार कहाँ है,

आज 'निशा' सब रिश्ते बदले,
पहले जैसा प्यार कहाँ है।

ग़ज़ल

ओमप्रकाश 'चन्चल', वाराणसी

इस तरह वो...

कोई अपनी हकीकत कहा ही नहीं,
जुर्म का फिर बगावत हुआ ही नहीं।

जिसकी चाहत में पलकें बिछाए रखे,
उसको खोना भी क्या जो मिला ही नहीं।

इस तरह वो करामात करता रहा,
आंख से सबके पर्दा हटा ही नहीं।

मेरे हिस्से में उसने सजा लिख दिया,
जिसको मेरी खता का पता ही नहीं।

जो मिला वो ही अपना फरेबी मिला,
अब दवा क्या जहर तक मिला ही नहीं।

ग़ज़ल

महेन्द्र तिवारी 'अलंकार ', वाराणसी

सहारा आंसुओं का

अगर आंसुओं का सहारा न होता
तो दुनिया में मेरा गुजारा न होता।
है जख्मों की दिल पे फेहरिस्त लंबी
बिना अश्क इनका नजारा न होता।
रुसवाइयों ने डुबा ही दिया था
अगर आंसुओं का किनारा न होता।
हम तो बिखर जाते नाकामियों से
अश्कों ने दामन पसारा न होता।
अश्कों के सैलाब में गम न बहते
तो मिलना खुशी से दुबारा न होता।
ये आंखें कभी झील जैसी न होतीं
अगर आंसुओं ने संवारा न होता।
मेरे पास बेवक्त कज़ा भी न आती
अगर जिंदगी का इशारा न होता।

गीत

राजीव डोंगरा

मेरा वैराग्य

मेरा वैराग्य,
वास्तव में मेरा सौभाग्य है।

मेरी हस्ती,
उस खुदा की मस्ती है।

मेरा निश्चल प्रेम,
उस ईश्वर का प्रतिरूप है।

मेरी स्तुति,
उस ईश् की अभिव्यक्ति है।

मेरी वंदना,
उस अलख निरंजन की अनुभूति है।

मेरी भक्ति,
उस तत्पुरुष के लिए आस्था है।

मेरी शक्ति
परब्रह्म स्वरूप का मात्र अंश है।

पता : कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश,
पिन कोड 176029

उद्गार मंथन

पानीदार देश का इस तरह सूखना ...

कृषि में जल संकट एवं जल सुधार पर विशेष प्रकाश डाल रहे हैं अनिवार्य प्रश्न के खेल एवं वाणिज्यिक संपादक कमल चौरसिया

वर्षा-जल एक अनमोल प्राकृतिक उपहार है जो प्रतिवर्ष लगभग पूरी पृथ्वी को बिना किसी भेदभाव के मिलता रहता है।

जल नीति में सुधार बेहद आवश्यक है, जिनके बिना कृषि संकट को हल नहीं किया जा सकता।

भारत को नदियों के देश के तौर पर भी जाना जाता है। देश में इतनी नदियाँ हैं कि पानी की कमी होने का प्रश्न ही नहीं उठता। लेकिन एक समाज और एक देश के तौर पर भारत ने अपनी जिस प्राकृतिक संपदा का सबसे ज्यादा अनादर की है वह पानी है। देश में इस समय जल संरक्षण को लेकर होने वाली अव्यवस्था अपने चरम पर है और यही कारण है कि लोगों को उनकी न्यूनतम जरूरत का पानी भी मयस्सर नहीं है। फिर भी पानी का गलत इस्तेमाल और उसकी बर्बादी लगातार जारी है। भारत में इस समय दुनिया की आबादी का छठा हिस्सा रहता है, लेकिन हमारे हिस्से में जो जमीनी पानी आता है वह मात्र 2.4 प्रतिशत है। भारत में व्याप्त पानी की समस्या स्पष्टतः जल संरक्षण को लेकर हमारे कुप्रबंन को दर्शाती है, न कि पानी की कमी को। देश में बारिश का मौसम है और कई राज्य बाढ़ग्रस्त भी। देश के ज्यादातर हिस्से को अपनी जरूरत से अधिक पानी मानसूनी वर्षा के इन चार महीनों में मिल जाता है। इनमें से कई इलाके ऐसे हैं जहाँ वर्षा से बाढ़ का खतरा बना रहता है, लेकिन यही इलाके कुछ महीनों बाद सूखे की चपेट में आ जाते हैं।

पंजाब के कुछ इलाकों में लोग यूरेनियम मिला हुआ पानी पीने को मजबूर हैं, तो बिहार के अधिकांश भाग में भूजल में आर्सेनिक की मात्रा बढ़ रही है। इसके अलावा भी अन्य कई राज्यों में भूजल में प्रदूषण की मात्रा बढ़ी है। शहरीकरण की दर तेजी से बढ़ रही है, जिससे शहरी जलापूर्ति और अपशिष्ट शोधन की हालत बदहाल हो गई है। आज हालात ऐसे बन गए हैं कि पानी को लेकर विवाद न केवल राज्यों के बीच बल्कि शहरों और देशों, कृषि एवं उद्योगों, एक ही गाँव या शहरी कॉलोनी के बीच भी हो रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन के नवीनतम आँकड़ों के मुताबिक भारत में 90 प्रतिशत पानी का इस्तेमाल कृषि में होता है।

इसमें कमी किये बिना ग्रामीण एवं शहरी घरेलू जरूरतों और उद्योगों के लिये पर्याप्त पानी उपलब्ध करा पाना लगभग असंभव है। इसके लिये जल सुधार बेहद आवश्यक हैं, जिसके बिना कृषि संकट को हल नहीं किया जा सकता। देश में पानी की अधिकांश खपत गेहूँ, चावल और गन्ने जैसी पानी की अधिक जरूरत वाली फसलों में होती है। महाराष्ट्र जैसे सूखे की आशंका वाले राज्य में भी यही स्थिति है, जहाँ कुल फसली क्षेत्र में गन्ने का हिस्सा केवल 4% है, लेकिन इस फसल में 65% सिंचाई के पानी की खपत होती है।

पानी की कमी वाले क्षेत्रों में भी किसान पानी की अधिक जरुरत वाली फसलें उगा रहे हैं। इसकी मुख्य वजह यह है कि इनके लिये सरकारी खरीद या निजी खरीद के रुप में एक भरोसेमंद बाजार उपलब्ध है।

भारत में बिना सोचे–समझे तात्कालिक फायदे के लिये इस्तेमाल किये जाने वाले कृषि उपाय भी पानी की इस कमी के लिये जिम्मेदार हैं। इसका खामियाजा कुछ प्रदेशों को पानी की कमी के रूप में झेलना पड़ रहा है और पूरे देश का जल–संतुलन बिगड़ रहा है। पंजाब, महाराष्ट्र और हरियाणा भी ऐसे राज्यों में शामिल हैं जहाँ युवा किसानों की कृषि संबंधी प्राथमिकताएँ बदल गईं हैं, जिससे हालात और खराब हो गए हैं। महाराष्ट्र के जो किसान पहले बाजरा, ज्वार और धान उगाया करते थे, वे अब गन्ना उगाने लगे हैं। गन्ना भले ही उन्हें अधिक आमदनी देता है, लेकिन बहुत अधिक पानी सोखता है। इसी प्रकार पंजाब और हरियाणा के किसान चावल और गेहूँ उगाने लगे हैं, जबकि उनके यहाँ भूजल स्तर पहले ही काफी नीचे जा चुका है।

स्थिति की गंभीरता को भाँपते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश की सभी पंचायतों को पत्र लिखकर बारिश के मौसम में वर्षा–जल संचयन करने को कहाँ है। वर्षा–जल एक अनमोल प्राकृतिक उपहार है जो प्रतिवर्ष लगभग पूरी पृथ्वी को बिना किसी भेदभाव के मिलता रहता है। परंतु समुचित प्रबंधन के अभाव में वर्षा जल व्यर्थ में बहता हुआ नदी, नालों से होता हुआ समुद्र के खारे पानी में मिलकर खारा बन जाता है। ऐसे में वर्तमान जल संकट को दूर करने के लिये वर्षा जल संचय ही एकमात्र विकल्प है। यदि वर्षा–जल के संग्रहण की समुचित व्यवस्था हो गई तो न केवल जल संकट से जूझते शहर अपनी तत्कालीन जरूरतों के लिये पानी जुटा पाएंगे बल्कि इससे भूजल भी रिचार्ज हो सकेगा। अतः शहरों के जल प्रबंधन में वर्षा–जल को सहेज कर रखना जरूरी है।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही जल संचय की परंपरा थी तथा वर्षा–जल का संग्रहण करने के लिये लोग प्रयास करते थे। इसीलिये कुएँ, बावड़ी, तालाब, नदियाँ आदि पानी से भरे रहते थे। इससे भूजल स्तर भी बढ़ जाता था तथा सभी जलस्रोत रिचार्ज हो जाते थे। लेकिन मानवीय उपेक्षा, लापरवाही, औद्योगीकरण तथा नगरीकरण के कारण ये जलस्रोत

लगभग नष्ट हो गए हैं। वर्षा–जल के संचय से इन जलस्रोतों को पुनः जीवित किया जा सकता है। देश में कुशल जल प्रबंधन के लिये कुछ ऐसे बुनियादी मुद्दे हैं, जिन पर प्रायः ध्यान नहीं दिया जाता, लेकिन उपयुक्त जल प्रबंधन के लिये ये बेहद जरूरी हैं। इनमें पर्यावरण (पानी केवल कोई वस्तु नहीं है, बल्कि एक ऐसा संसाधन है जो हमारे इकोसिस्टम में है, इकोसिस्टम का प्रबंधन हम कैसे करते हैं, इस पर ही यह निर्भर करता है कि हमें कितना पानी मिलेगा), पानी का औद्योगिक इस्तेमाल, जल प्रदूषण प्रबंधन, वर्षा–जल, नदियाँ, बाढ़ प्रबंधन, लघु सिंचाई, जल संरक्षण, संस्थागत परिचालन, जलवायु परिवर्तन, एजेंसियों में समन्वय और वास्तविक भूजल नियमन आदि शामिल हैं।

पाठकों से अपील

आदरणीय लेखकों/साहित्यकारों को अवगत कराते हुए निवेदन करना है कि वे अपनी रचनाएँ KrutiDev010 फॉट में टाईप कराकर ही हमें इमेल करें या पत्राचार करें। जिन सज्जन के यहाँ टंकण की सुविधा नहीं है वह अपनी रचना/रचनाओं को हमें शुद्ध, साफ-सुथरी विरल लेखनी में नीली या काली बॉल पेन से लिखकर भी भेज सकते हैं। ध्यान रहे कि अपनी रचना की एक छाया प्रति अपने पास अवश्य रखें क्योंकि प्रकाशित या अप्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं भेजी जाएँगी। हमारा पता है- प्रशासनिक व पत्राचार कार्यालय- सिरसा, पोस्ट-कोरौत, कोटवा, वाराणसी, उ.प्र., पिन-221105, 1/253, नारायनपुर भोजूबीर, वाराणसी, पिन-221003, समाचार कार्यालय- मुन्सफ कटरा, जी.टी. रोड, चन्दौली उ.प्र.

www:anivaryaprashna.com / email-anivaryaprashna@gmail.com

वर्ष 01, अंक 02, सितम्बर 2019

अनिवार्य प्रश्न?
हर कलम बिकती नहीं।
अगर पढ़िए तो सिर्फ सच पढ़िए

क्या होती है पादलगी या पलग्गी

भारतीय संस्कृति और परम्परा में चरणस्पर्श और उसकी वैज्ञानिकता

कोई आपके पैर छुए तब ध्यान रखें ये बातें

जब भी कोई हमारे पैर छूता है तो उस समय भगवान का नाम लेने से पैर छूने वाले व्यक्ति को भी सकारात्मक फल मिलते हैं। आशीर्वाद देने से पैर छूने वाले व्यक्ति की समस्याएं खत्म होती हैं, उम्र बढ़ती है और नकारात्मक शक्तियों से उसकी रक्षा होती है। हमारे द्वारा किए गए शुभ कर्मों का अच्छा असर पैर छुने वाले व्यक्ति पर भी होता है। जब हम भगवान को याद करते हुए किसी को सच्चे मन से आशीर्वाद देते हैं तो उसे लाभ अवश्य मिलता है। किसी के लिए अच्छा सोचने पर हमारा पुण्य भी बढ़ता है।

क्यों किसी बड़े का पैर छूना चाहिए?

पैर छूना या प्रणाम करना, केवल एक परंपरा नहीं है, यह एक वैज्ञानिक क्रिया है जो हमारे शारीरिक, मानसिक और वैचारिक विकास से जुड़ी है। पैर छूने से केवल बड़ों का आशीर्वाद ही नहीं मिलता, बल्कि बड़ों के स्वभाव की अच्छी बातें भी हमारे अंदर उतर जाती है। पैर छूने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे शारीरिक कसरत होती है।

भारतीय संस्कृति की कई सारी परम्पराएँ व रीतियाँ अनमोल हैं। जो इसकी सामाजिक व आध्यात्मिक सम्पदा की परिचायक हैं। इन्हीं में से एक परम्परा है चरण स्पर्श करने की। पैर छूना, प्रणाम करना या चरण स्पर्श करना ये एक रीत–रिवाज भर नहीं है, अपितु एक अतिवैज्ञानिक व्यवहार है जो हमारे शारीरिक, मानसिक और वैचारिक स्वास्थ्य व उसके विकास से जुड़ा हुआ है। चरण स्पर्श करने से बड़ों का आशीर्वाद ही नहीं मिलता बल्कि बड़ों के व्यक्तित्व की सकारात्मक चुम्बकीय उर्जा भी हमारे अंदर समाने लगती है। चरण स्पर्श करने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इससे शरीर को योग मुद्रा जैसा लाभ मिलता है। झुककर पैर छूना, घुटने के बल बैठकर पैर छूना, साष्टांग प्रणाम करना चरण स्पर्श के प्रमुख तरीके हैं।

चरण स्पर्श के लाभ

झुककर चरण स्पर्श करने से हमारी कमर और स्पाइन को काफी आराम मिलता है। घुटने पर झुक कर चरण स्पर्श करने से हमारे शरीर के जोड़ों पर दबाव पड़ता है, जिससे जोड़ों के दर्द में आराम होता है। चरण स्पर्श के साष्टांग प्रणाम विधि में शरीर के सारे जोड़ कुछ समय के लिए एक सीध में हो जाते हैं, इससे देह को योगमुद्रा जैसा ही लाभ होता है।

साथ ही झुककर चरण स्पर्श करने से खून का संचार ठीक होता है जो पूरे शरीर को फायदा पहुँचाता है। चरण स्पर्श का लाभ यह है कि इससे व्यक्ति में छाए अभिमान व अहंकार का नाश होता है। चरण स्पर्श का मतलब है उसके प्रति समर्पण भाव लाना है। जब मन के भीतर समर्पण आता है तो अहंकार को मिटने में दो क्षण लगता है।

चरण स्पर्श का सही तरीका

किसी के चरण स्पर्श का सही तरीका झुककर उसके अंगूठे को स्पर्श करना है। चरण के अंगूठे द्वारा विशेष शक्ति का संचार होता है। आदमी के पांव के अंगूठे में विद्युत संप्रेषणीय शक्ति होती है। यही कारण है कि अपने वृद्धजनों के नम्रतापूर्वक चरण स्पर्श करने से जो आशीर्वाद मिलता है, उससे व्यक्ति की प्रगति के रास्ते खुलने लगते हैं। माना जाता है कि जो पुण्य कपिला नामक गाय के गोदान से प्राप्त होता है और जो पुण्य कार्तिक व ज्येष्ठ मासों में पुष्कर स्नान व दान आदि से मिलता है, वह पुण्य फल चरण प्रक्षालन एवं चरण स्पर्श से प्राप्त होता है।

हिन्दू विवाह संस्कार में द्वारपूजन के क्षण कन्या के पिता द्वारा इसी भाव से श्रीवर का चरण प्रक्षालन किया जाता है। वृद्धजनों की पादलगी करने से जो आशीर्वाद मिलता है उससे अज्ञानता का अंधकार नष्ट होता है।

हमारी परंपरा में चरण स्पर्श करना हमारे धर्म के रीति–रिवाजों और बड़ों के प्रति आदर–सम्मान व्यक्त करने का प्रतीक है। चरण स्पर्श करने की परंपरा वैदिक काल से ही हमारी संस्कृति का हिस्सा बनी हुई है। इस परंपरा के अनुसार लोग अपने से बड़ों, गुरुओं और अपने माता–पिता व परिजन के चरण स्पर्श कर बल, विद्या, बुद्धि और सुख–समृद्धि की प्राप्त करते हैं। वरिष्ठ व्यक्ति अपने से छोटे को उनकी कामना पूरी होने का आशीर्वाद देते हैं। भारत के कई हिस्सों में विजयादशमी के दिन सम्पूर्ण समुदाय के लोग अपने से बड़ों का चरण स्पर्श करते हैं।

विजया दशमी तो जैसे चरण स्पर्श क्रिया का उत्सव दिवस है। चरण स्पर्श से हमारे शरीर में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होती है। यही कारण है कि अपने वृद्धजनों के नम्रतापूर्वक चरण स्पर्श करने से जो आशीर्वाद मिलता है, उससे चरण स्पर्श करने वाले की मनोकामना पूरी होती है।

परंम्परा का कारण

शास्त्रों की मान्यता है कि वरिष्ठ, वयोवृद्ध जन के चरण स्पर्श से हमारे पुण्य क्षीण नहीं होते अपितु पुण्यों में वृद्धि होती है। उनके आशीर्वाद से हमारा अभाग्य दूर होता है तथा मन को शांति मिलती है।

चरण स्पर्श से व्यक्ति के मन में अच्छे संस्कारों का जन्म होता है तथा नई पुरानी पीढ़ी के बीच स्वस्थ सकारात्मक संवाद की स्थापना होती है।

चरण स्पर्श अथवा पादलगी

शिष्टाचार का महत्वपूर्ण अंग है, भारतीय सनातन संस्कृति का यह प्रणाम–निवेदन व अभिवादन एक जीवन संस्कार है। अभिवादन से आयु, विद्या व यश की वृद्धि होती है। सनातन परम्परा में प्रातः जागरण से शयन पर्यन्त चरण स्पर्श की अविछिन्न रीति प्रवाहमान है।

चरण स्पर्श की विधियाँ

पहली विधि यानी झुककर चरण स्पर्श करने की है इससे कमर और रीढ़ की हड्डी को योगासन की भाँति ही आराम मिलता है।

दूसरी विधि में शरीर के सारे जोड़ों को मोड़ा जाता है जिससे उनमें होने वाले दर्द से बहुत आराम आता है।

तीसरी विधि से चरण स्पर्श करने यानि साष्टांग प्रणाम करने से शरीर के सारे जोड़ थोड़ी देर के लिए तन जाते हैं तथा इससे तनाव दूर होता है। इसके अलावा प्रथम विधि द्वारा चरण स्पर्श में झुकना पड़ता है। झुकने से सिर में रक्त प्रवाह बढ़ जाता है जो स्वास्थ्य और खास तौर पर नेत्रों के लिए लाभकारी है। द्वितीय तथा तृतीय विधि से चरण स्पर्श करने से स्वास्थ्य लाभ होता है और अनेकों रोगों को दूर करने में सहायक है। चरण स्पर्श से मन का अहंकार समाप्त होता है तथा हृदय में समर्पण और विनम्रता का भाव जागृत होता है। इसलिए भारतीय संस्कृति में बड़ों के सादर चरण स्पर्श की पुरातन परम्परा है।

जाने क्या है साष्टांग प्रणाम?

अभिवादन की श्रेष्ठतम विधि साष्टांग प्रणाम है। पेट के बल भूमि पर दोनों हाथ आगे फैलाकर लेट जाना साष्टांग प्रणाम है। इसमें मस्तक, नासिका, वक्ष, ऊरू, घुटने, करतल तथा पैरों की उंगलियों का ऊपरी भाग–ये आठ अंग भूमि से स्पर्श करते हैं और फिर दोनों हाथों से सामान्य पुरुष का चरण स्पर्श किया जाता है।

शास्त्रीय निषिद्धता

सिर्फ एक हाथ से प्रणाम करना व चरण स्पर्श करना शास्त्रीय रुप से निषिद्ध है। वास्तव में प्रणाम देह को नहीं अपितु देह में स्थित सर्वान्तर्यामी शक्ति को किया जाता है।

चरणस्पर्श या पादलगी (पलग्गी) के लाभ

मान्यता है कि जो पुण्य कपिला गाय के गोदान विशेष मासों में पुष्कर स्नान से मिलता है, वही फल किसी ब्राह्मण व्यक्ति के चरण स्पर्श करने से होता है।

पादलगी (पलग्गी) का महत्व इसी बात से पता लगता है कि जब भगवान् श्रीकृष्ण अपने मित्र सुदामा से मिले थे तो उन्होंने आदर भाव से उनके चरणों को पखारा था। इसी मान्यता के चलते नवरात्रि में कुवारियां भी इसी तरह पैर धोकर पूजी जाती हैं।

सनातन धर्म में यह माना जाता है कि जब कोई व्यक्ति झुककर अपने बुजुर्गो का चरण स्पर्श करता है तो उनका अहंकार टूटता है और वह व्यक्ति अपने से वरिष्ठों की आयु, अनुभव और ज्ञान का सम्मान करने के भाव को प्रकट करता है।

भारत में चरण स्पर्श के महत्व के पीछे एक प्रगाढ़ वैज्ञानिक कारण भी रहा है। पावं छूने के समय जब हाथ की उंगलियां किसी व्यक्ति के चरणों से जुड़ती हैं, तो दोनों के बीच संचरित होकर एक आत्मीय सम्बन्ध स्थापित होता है। परस्पर शरीर की ऊर्जा अप्रत्यक्ष रुप से जुड़ जाती है। आपकी उंगलियां उस ऊर्जा की स्वीकार्ता बन जाती हैं, पैर अप्रत्यक्ष रुप से ऊर्जा के दाता बन जाते हैं। आप अपने से बड़े का आशीर्वचन लेकर असीम सकारात्मक ऊर्जा से भर जाते हैं।

हमारे समाज में बड़े-बुजुर्गों तथा संतों-साधुओं के चरण स्पर्श करने की रीति प्राचीन काल से चली आ रही है। इस परम्परा के पीछे अनेक सांस्कृतिक एवं बैज्ञानिक कारण मौजूद हैं।

मसूरी

नहीं देखे, तो कुछ नहीं देखे!

दी वर्ल्ड जर्नी डेस्क

अद्भुत एवं अतुलनीय भारत के उत्तराखंड राज्य का एक मनोरम क्षेत्र है मसूरी। जिसके बारे में कहा जाता है कि मसूरी नहीं देखे तो कुछ नहीं देखे। यह क्षेत्र पर्वतों की रानी नाम से भी मशहूर है। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित मसूरी स्वर्ग जैसा है। जहां लोग घूमने तो चले आते हैं पर लौटने का मन नहीं करता। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 2005 मीटर है। यहां पर्वतीय एवं दर्शनीय वनों का झुंड है। इसका सम्पूर्ण वर्णन किसी लेख, रिपोर्ताज, शब्द या भाव चित्र में नहीं किया जा सकता। मसूरी के मनोरम दृश्य व उसके प्राकृतिक सौंदर्य को सिर्फ देखकर ही महसूस किया जा सकता है।

उसके पास स्थित देहरादून में पाई जाने वाली वनस्पति और जीव–जंतु भी इसके सौंदर्य को और अधिक बढ़ा देते हैं। उत्तर भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व के लिए यह एक बेहतरीन ग्रीष्मकालीन पर्यटन क्षेत्र है। यह पहाड़ों की रानी कही जाती है और यहां आने के बाद लौटने की किसी की इच्छा नहीं होती। मसूरी धरती का परी महल है। यहां के लोग प्रायः यहां बहुतायत मात्रा में पाए जाने वाले मनसूर के वृक्ष के नाम को इसके नाम का कारण बताते हैं मन्सूर वृक्ष के नाम के कारण ही इस क्षेत्र का नाम मसूरी पड़ा।

इसका इतिहास 1825 में कैप्टन यंग जो एक अंग्रेज अधिकारी और देहरादून के निवासी थे से आरंभ होता है। यह मसूरी उनके छुट्टी बिताने का स्थान हुआ करता था। यहां आना–जाना पहले कुछ कठिन था लेकिन नई सरकारों ने यहां की यात्रा एवं सड़क मार्ग को सरल कर दिया है।

मसूरी में भी अंग्रेज प्रभावित क्षेत्र माल रोड है। यह यहाँ का मुख्य क्षेत्र है। यह क्षेत्र पूर्व में पिक्चर पैलेस से होकर पश्चिम में पब्लिक लाइब्रेरी तक है। ब्रिटिश शासन काल में यहां पर लिखा होता था कि भारतीयों को अनुमति नहीं हैं। सभी का मानना है कि इस प्रकार के विचार किसी रास्ते के प्रवेश मार्ग की जगह लिखना अंग्रेजों की भाषा विचार निक्रिष्ठता को दर्शाता है जिसे बाद में हमारे भारतीय नागरिकों एवं शासकों ने तोड़ दिया। मोतीलाल नेहरू ने अपने निवास के दौरान इस नियम को रोज तोड़ देते थे। जब दलाईलामा को चीन अधिकृत क्षेत्र से निर्वासित किया गया तो निर्वासित सरकार यहीं आकर बनाए थे जो बाद के समय में हिमांचल प्रदेश के धर्मशाला में स्थानांतरित हो गई।

मसूरी आज भी ग्रीष्म पर्यटकों काल में भर जाती है। हिमालय की चोटियों का अद्भुत दर्शन यहीं से होता है। यह आकर्षक जमीन व अलौकिक आसमान को निहारने के लिए जानी जाती है।

आवागमन

भारत के प्रमुख नगरों जैसे दिल्ली आदि जगहों से पहले से और अधिक सरल एवं सुगम हो गया है। मसूरी को यमुनोत्री व गंगोत्री जैसे तीर्थों का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। इसका सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन देहरादून है जहां से सरकारी बसें, टैक्सियां व निजी यातायात के साधन भी हर समय उपलब्ध रहते हैं।

यहां जाने का अनुकूल समय

मसूरी घूमने का सबसे बढ़िया समय मार्च से नवंबर का माना गया है विशेषज्ञों का कहना है कि मसूरी वर्षा काल में घूमने लायक नहीं रहती। बादलों की अधिकता के कारण चोटियों का दर्शन नहीं हो पाता। मगर मंसूरी वर्षा ऋतु में खूब हरी–भरी हो जाती है अतः और अधिक दर्शनीय हो जाती है।

गन हिल

कहा जाता है कि आजादी के पूर्व के वर्षों में इस पहाड़ी के ऊपर रखी तोप प्रतिदिन दोपहर के समय चलाई जाती थी ताकि लोग अपनी घड़ियों का समय ठीक कर लें। इस कारण इस स्थान का नाम गन हिल रखा गया। मसूरी कचहरी से 20 मिनट की दूरी पर स्थित गन हिल मसूरी की दूसरी सबसे ऊंची चोटी है जहां पैदल और रोप–वे से भी जाया जा सकता है। यहां रोप–वे से घूमने का अपना अलग ही रोमांच होता है। जो जीवन में यादगार रह जाता है।

तिब्बती मंदिर

यह मंदिर अपनी खूबसूरती व शिल्प से सैलानियों का मन मोह लेता है। इस मंदिर के पीछे की तरफ कुछ ड्रम लगाए गए हैं जिनके बारे में मान्यता है कि इन्हें घुमाने के बाद याची की सभी मनोकामना पूरी होती है। कुछ इसी तरह के ड्रम वाराणसी के सारनाथ में भी मिलते हैं।

चाइल्ड लाज

यह मसूरी की सबसे ऊंची चोटी है यह लाल टिब्बा के समीप पड़ती है। यहां से प्रदेश राज्य सरकार का टूरिस्ट कार्यालय 5 किलोमीटर दूर है। चाइल्ड लॉज घोड़े से भी जाने की व्यवस्था है यहां से वर्षा को देखना बहुत आनंदमय रहता है।

म्युनिसिपल गार्डन

भारतीय स्वतंत्रता से पहले तक इस गार्डन को बोटनिकल गार्डन भी कहा जाता था इसके निर्माता एक विश्वविख्यात वैज्ञानिक डॉक्टर थे। डॉक्टर ने आस–पास फलोदी क्षेत्र को सुंदर उद्यान क्षेत्र में रूपांतरित कर दिया था उनके बाद इसकी देखरेख की जिम्मेदारी कंपनी प्रशासन की हाथों में चला गया इसी वजह से इसे कंपनी गार्डन कहा जाने लगा

झड़ी पानी फाल

यह मसूरी से 8 किलोमीटर दूर स्थित है यहां आने के लिए बस कार की सेवा भी उपलब्ध है। मसूरी के प्राकृतिक मनोरम क्षेत्रों में झड़ी पानी फाल का भी नाम आता है।

भट्टा फाल

देहरादून से मसूरी जाने वाले मार्ग पर मसूरी से कुल 7 किमी दूर स्थित भट्टा फाल सैलानियों के लिए बड़े आकर्षण की जगह है। यहां स्नान करने व पिकनिक मनाने की पर्याप्त जगह है। सप्ताहांत में पिकनिक मनाने के लिए क्षेत्र के आसपास के लोगों के साथ ही दूर–दूर के लोग भी आ जाते हैं।

कैमल बैकरोड

इस सड़क की कुल लंबाई 3 किलोमीटर है जो पुलरी बाजार से आरंभ होती है। यहां पैदल व घुड़सवारी का बेहतर आनंद लिया जा सकता है। हिमालय में सूर्यास्त होने का अनुपम दृश्य यहां से अधिक अद्भुत दिखाई देता है।

केंप्टी फॉल

मसूरी से 15 किलोमीटर दूर व 45 फुट की ऊंचाई पर स्थित केम्प्टी फॉल सबसे खूबसूरत झरना है। यह झरना सुंदर घाटियों के बीच स्थित है। इसके चारों तरफ सुंदर पहाड़ों की कतार है यहां किसी का जल में स्नान करना उसे ऊर्जा से लबरेज कर देता है। झरना अलग–अलग 5 धाराओं में बहता है जो सैलानियों एवं पर्यटकों के लिए आकर्षण का प्रमुख केंद्र बिंदु है। स्थानीय लोगों का मानना है कि अंग्रेज अपनी छुट्टियों की दावतें अक्सर यहीं पर किया करते थे। इसीलिए यहां का नाम कैम्पटीफाल है। यह मसूरी घाटी का सबसे सुंदर जलप्रपात है।

ज्वाला जी मंदिर

समुद्र तल से 2104 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह ज्वाला जी मंदिर की चोटी पर बना है। जहां माता दुर्गा की प्रतिमा है व उनकी पूजा होती है। मंदिर के चारों तरफ घनघोर जंगल है और वहां से चोटियां व दून की घाटी व यमुना की घाटी के सुंदर दृश्य मन को मोह लेते हैं।

वाम चेतना केंद्र

यह एक पिकनिक स्पॉट है वाम चेतना केंद्र के आसपास पार्क है जो देवदार के जंगलों और फूलों की झाड़ियों से घिरे हुए हैं।

क्लाउड एंड

इसे एक ब्रिटिश मेजर ने बनवाया था। इस बंगले को क्लाउड एंड कहते हैं। आज के समय में इस बंगले को एक होटल के रूप में बदल दिया गया है। यहां से यमुना नदी का जल प्रवाह एवं हिमाच्छादित चोटियां स्पष्ट देखी जा सकती हैं इसी वजह से हनीमून मनाने वाले नव दंपति एवं वैवाहिक जोड़ों की यहां भीड़ रहती है। स्थानीय लोगों का मानना है कि लिव–इन रिलेशन में रहने वाले जोड़े भी भारी संख्या में यहां आकर अपना एकाकी व मुक्त जीवन जीते हैं।

सर जॉर्ज एवरेस्ट हाउस

भारत के प्रथम सर्वेयर जनरल सर जॉर्ज एवरेस्ट का आवास और कार्यालय यहीं था। यह विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट का नाम इन्हीं सर जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर रखा गया है।

नाग देवता मंदिर

नाग देवता का यह मंदिर मसूरी से लगभग 6 किलोमीटर की दूरी पर बना है और यहां लगभग प्रत्येक साधन से सरलता से जाया जा सकता है। आसपास के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में यमुना ब्रिज, धनौल्टी, सुरकंडा देवी, लाखामंडल, कैमल बैक रोड, चार्ली विलेज रोड, सिस्टर बाजार रोड व स्प्रिंग रोड प्रमुख हैं।

PRESS
स्याही प्रकाशन
यहाँ सब कुछ छपता है।
अब आपकी सेवा में अपनी अनेक शाखाओं के साथ
शाखाएँ :
भोजूबीर शिवपुर सिरसा थानागद्दी शहाबगंज, चन्दौली
ई–बुक, किताब, अखबार, पत्रिका, फ्लैक्स, ग्लोशाइन बोर्ड, पोस्टर, पैम्प्लेट, आई–कार्ड, विजिटिंग कार्ड, शादी कार्ड, डायरी, कैलेण्डर, रसीद, टी–शर्ट, कप इत्यादि की रचना और छपाई होती है।
मुख्यालय : नरायनपुर, भोजूबीर-सिन्धोरा रोड, वाराणसी, 9161099088
syahiprakashan@gmail.com

बांसुरी

भारतीय संगीत में महत्व प्राप्त व कभी मोहन के मुख से गुजरती हुई मन को मोह लेने वाली बांसुरी दुनिया भर में सुनी वह बजाई जाती है। यह काष्ठ वाद्य परिवार में आती है। बांसुरी एक सुशीर वाद्य है। इस अंक में बांसुरी पर अनिवार्य प्रश्न की विशेष प्रस्तुति-

मंचदूत डेस्क

कभी मोहन के मुख से गुजरती हुई मन को मोह लेने वाली बांसुरी दुनिया भर में सुनी व बजाई जाती है। यह काष्ठ वाद्य परिवार का एक उपकरण है। बांसुरी एक सुशीर वाद्य भी है। यह हवा एवं उससे उत्पन्न ध्वनि विज्ञान पर आधारित स्वर वाद्य है। वायु जब यंत्र के क्षेत्र के आर–पार प्रवाहित की जाती है तो उसके कारण ध्वनि उत्पन्न होती है। हमारी बांसुरी सामान्यता बेलनाकार होती है, जो वायु को उत्तेजित करती है। वादक यंत्र के छिद्रों को खोल एवं बंद कर आरोह–अवरोह में परिवर्तित करता है। इसमें स्वर की लंबाई का भी विशेष महत्व रहता है। साथ ही वायुदाब में परिवर्तन के द्वारा आधारभूत आवृत्ति से स्वर लहरियों को जोड़ा एवं बदला जाता है। इससे सुंदर, अति सुंदर, मोहक स्वर सुनाई देती है। एक अध्ययन का उल्लेख करना है जिसमें व्यावसायिक वाद को ही आंख में पट्टी बांधकर प्रयोग किया गया तो यह पाया गया कि लोग विभिन्न धातुओं से बने बांसुरी वाद्य यंत्रों में कोई अंतर नहीं खोज पाए। कोई भी वादक वाद्ययंत्र की धातु की सही पहचान नहीं कर सका। हालांकि भारत में बांस की बनी बांसुरी का प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता है जिसका विकास स्वतंत्र रूप से हुआ। हिंदू धर्म के भगवान कृष्ण को परंपरागत बांसुरी वादक माना गया है। पश्चिमी संस्कृति एवं संस्कारों की बांसुरी की तुलना में भारत की अपनी बांसुरी बहुत साधारण है। ऐसा भी कहा जाता है कि नागर कोई क्षेत्र में पैदा होने वाले बास से बनी बांसुरी की शान एवं उसकी स्वर प्रवाह की मधुरिमा सबसे ज्यादा होती है।

भारतीय बांसुरी के प्रकार

भारतीय बांसुरी के दो मुख्य प्रकारों का वर्तमान में प्रयोग हो रहा है। प्रथम वह बांसुरी है, जिसमें अंगुलियों हेतु छह छिद्र एवं एक दरारनुमा छिद्र होता है एवं जिसका प्रयोग मुख्यतः उत्तर भारत में हिंदुस्तानी संगीत में किया जाता है। दूसरी, वेणु या पुलनगुझाल है, जिसमें आठ अंगुली छिद्र होते हैं एवं जिसका प्रयोग मुख्य रूप से दक्षिण भारत में कर्नाटक संगीत में किया जाता है। इस तकनीक का प्रारंभ 20वीं शताब्दी में टी. आर. महालिंगम ने किया था। तब इसका विकास बी. एन. सुरेश एवं डॉ० एन. रमानी ने किया। बांसुरी के कई और प्रकार और वादन शैलियां हैं जिसमें चीनी बांसुरी व जापानी बांसुरी उल्लेखनीय हैं।

परिचय और इतिहास

खोजी गई सबसे पुरानी बांसुरी गुफा में रहने वाले एक तरुण भालू की जाँघ की हड्डी का एक टुकड़ा हो सकती है, जिसमें दो से चार छेद हो सकते हैं, यह स्लोवेनिया के डिव्जे बेब में पाई गई थी जो करीब 43,000 साल पुरानी है। हालांकि, इस तथ्य की प्रामाणिकता आज तक विवादित है। 2008 में जर्मनी के उल्म के पास होहल फेल्स गुहा में एक और कम से कम 35,000 साल पुरानी बांसुरी पाई गई। इस पाँच छेद वाली बांसुरी में एक वी–आकार का मुखपत्र है और यह एक गिद्ध के पंख की हड्डी से बनी है। खोज में शामिल शोधकर्ताओं ने अपने निष्कर्षों को अगस्त 2009 में ''नेचर'' नामक जर्नल में आधिकारिक तौर पर प्रकाशित किया था। यह खोज इतिहास में किसी भी वाद्य यंत्र की सबसे पुरानी खोज भी मानी जाती है। बांसुरी, पाए गए कई यंत्रों में से एक है, यह होहल फेल्स के शुक्र के सामने और प्राचीनतम ज्ञात मानव नक्काशी से थोड़ी सी दूरी पर होहल फेल्स की गुफा में पाई गई थी। खोज की घोषणा पर, वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि ''जब आधुनिक मानव ने यूरोप को उपनिवेशित किया था, खोज उस समय की एक सुस्थापित संगीत परंपरा की उपस्थिति को प्रदर्शित करती है ''.वैज्ञानिकों ने यह सुझाव भी दिया है कि बांसुरी की खोज निएंदरथेल्स और प्रारंभिक आधुनिक मानव '' के बीच संभवतः व्यवहारिक और ''सृजनात्मक खाड़ी'' को समझाने में सहायता भी कर सकती है।

मेमथ के दांत से निर्मित, 18.7 सेमी लम्बी, तीन छिद्रों वाली बांसुरी (दक्षिणी जर्मन स्वाबियन अल्ब में उल्म के निकट स्थित गुफा से प्राप्त हुई है और इसकी तिथि 30000 से 37,000 वर्ष पूर्व निश्चित की गयी है। यह 2004 में खोजी गयी थी और दो अन्य हंस हड्डियों से निर्मित बांसुरियां जो एक दशक पहले खुदाई में प्राप्त हुई थीं (जर्मनी की इसी गुफा से, जिनकी तिथि लगभग 36,000 साल पूर्व प्राप्त होती है) प्राचीनतम ज्ञात वाद्ययंत्रों में से हैं।

बाइबिल की जेनेसिस 4:21 में जुबल को, ''उन सभी का पिता जो उगब और किन्नौर बजाते हैं'', बताया गया है। पूर्ववर्ती हिब्रू शब्द कुछ वायु वाद्य यंत्रों या सामान्यतः वायु यंत्रों को संदर्भित करता है, उत्तरवर्ती एक तारदार वाद्य यंत्र या सामान्यतः तारदार वाद्ययंत्र को संदर्भित करता है। भारतीय संस्कृति एवं पुराणों में भी बांसुरी हमेशा से आवश्यक अंग रहा है, एवं कुछ वृतातों द्वारा क्रॉस बांसुरी का उद्भव भारत में ही माना जाता है क्योंकि 1500 ई.पू. के भारतीय साहित्य में क्रॉस बांसुरी का विस्तार से विवरण है।

बांसुरी ध्वनि विज्ञान व बांसुरी की श्रेणियाँ

अपने आधारतम रूप में बांसुरी एक खुली नलिका हो सकती है जिसे बोतल की तरह बजाया जाता है। बांसुरी की कुछ विस्तृत श्रेणियां हैं। ज्यादातर बांसुरियों को संगीतकार या वादक ओठ के किनारों से बजाता है। हालांकि, कुछ बांसुरियों, जैसे विस्सल, जैमशोर्न, फ्लैजिओलैट, रिकार्डर, टिन विस्सल, टोनेट, फुजारा एवं ओकारिना में एक नली होती है जो वायु को किनारे तक भेजती है (''फिपिल'' नामक एक व्यवस्था) इन्हें फिपिल फ्लूट कहा जाता है।

बगल से (अथवा आड़ी) बजायी जाने वाली बांसुरियों जैसे कि पश्चिमी संगीत कवल, डान्सो, शाकुहाची, अनासाजी फ्लूट एवं क्वीना के मध्य एक और विभाजन है। बगल से बजाई जाने वाले बांसुरियों में नलिका के अंतिम सिरे से बजाये जाने की के स्थान पर ध्वनि उत्पन्न करने के लिये नलिका के बगल में छेद होता है। अंतिम सिरे से बजाये जाने वाली बांसुरियों को फिपिल बांसुरी नहीं समझना चाहिये।

बांसुरी एक या दोनों सिरों पर खुली हो सकती हैं। ओकारिना, जुन, पैन पाइप्स, पुलिस सीटी एवं बोसुन की सीटी एक सिरे पर बंद (क्लोज एंडेड) होती हैं। सिरे पर खुली बांसुरी जैसे कि कंसर्ट–बांसुरी एवं रिकॉर्डर ज्यादा सुरीले होते हैं।

बांसुरियों को कुछ विभिन्न वायु स्त्रोतों से बजाया जा सकता है। परंपरागत बांसुरी मुँह से बजायी जाती हैं, यद्यपि कुछ संस्कृतियों में तो नाक से बजायी जाने वाली बांसुरी भी प्रयोग होती है।

वैस्टर्न कंसर्ट बांसुरी

यह जर्मन बांसुरी का 19वीं सदी का वंशज है। यह एक आढ़ी या अनुप्रस्थ बांसुरी है जो कि शीर्ष पर बंद होती है। इसके शीर्ष के नजदीक एक दरारनुमा छेद होता है जिससे वादक बजाता है। बांसुरी में कई गोलाकार ध्वनि छिद्र होते हैं, जो कि इसके बारोक पूर्वजों के अंगुली छिद्र से बड़े होते हैं। वैस्टर्न कंसर्ट बांसुरी मूलतः बोहम की डिजाइन तक ही सीमित रहे एवं बोहम प्रणाली के नाम से जाने जाते है।

स्टैण्डर्ड कंसर्ट बांसुरी को सप्तक सी स्वर में स्वर बद्ध किया गया है तथा इसका विस्तार मध्य सी से प्रारंभ होकर तीसरे सप्तक तक जाता है। इसका तात्पर्य है कि कंसर्ट बांसुरी सर्वाधिक प्रचलित आर्केस्ट्रा यंत्रों में से एक है, इसका एक अपवाद पिकोलो है जो एक सप्तक ऊपर बजता है। जी आल्टो एवं सी बांस बांसुरी का प्रयोग यदा–कदा ही होता है। इन्हें क्रमशः पूर्ण चतुर्थ सप्तक एवं कंसर्ट बांसुरी से एक सप्तक नीचे स्वरबद्ध किया गया है। बांस की तुलना में आल्टो बांसुरी के अंश अधिक लिखे जाते हैं। कुछ अन्य विरले बांसुरी रूप हैं जैसे कॉन्ट्राबास, डबल कॉन्ट्राबास एवं हाइपरबास जिन्हें मध्य सप्तक से क्रमशः दो, तीन और चार सप्तक नीचे स्वरबद्ध किया गया है।

समय-समय पर

बांसुरी और पिकोलो के अन्य आकारों का प्रयोग होता है। आधुनिक स्वर बद्ध प्रणाली का एक विरला यंत्र ट्रेबल जी बांसुरी है। यंत्र पुराने स्वर मानकों के अनुसार बनाया गया है, जिसका प्रयोग सैद्धांतिक रूप से विंड–बैंड संगीत सहित डी बी पिकोलो, एब सोपरानो बांसुरी (वर्तमान कंसर्ट सी बांसुरी के समकक्ष प्राथमिक यंत्र), एफ आल्टो बांसुरी एवं बी बी बास बांसुरी में होती है।

भारतीय बांस निर्मित बांसुरी

बांस की एक कर्नाटकीय आठ–छिद्र वाली बांस की बांसुरी होती है। यह विशेष रूप से कर्नाटकीय संगीत में प्रयोग की जाती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में बांस से निर्मित बांसुरी एक महत्वपूर्ण यंत्र है जिसका विकास पश्चिमी बांसुरी से स्वतंत्र रूप से हुआ है। पश्चिमी संस्करणों की तुलना में भारतीय बांसुरी बहुत साधारण होती है। ये बांस द्वारा निर्मित होती हैं एवं चाबी रहित होती हैं।

महान भारतीय बांसुरी वादक पन्नालाल घोष ने सर्वप्रथम छोटे से लोक वाद्ययंत्र को बांस बांसुरी (सात छिद्रों वाला 32 इंच लंबा) में परिवर्तित करके इसे परंपरागत भारतीय शास्त्रीय संगीत बजाने योग्य बनाया था तथा इसे अन्य शास्त्रीय संगीत वाद्य–यंत्रों के कद का बनाया था। अतिरिक्त छिद्र ने मध्यम बजाना संभव बनाया, जो कि कुछ परंपरागत रागों में मींदज (एम एन, पी एम एवं एम डी की तरह) को सरल बनाता है।

बनारस और बांसुरी

बनारस के प्रमुख वादकों में पंडित पन्नालाल घोष, नीलमणि वर्तमान में पंडित हरि प्रसाद चौरसिया जी, राजेंद्र प्रसन्ना जी आदि गिने जाते हैं। यहाँ के प्रमुख प्रशिक्षण केंद्रों में बाँसुरी की शिक्षा संभव है जैसे सतखंडा संगीत एकेडमी, बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी एवं सुर संगीत साधना केन्द्र आदि हैं। यह सभी वाराणसी के प्रमुख संगीत शिक्षा केन्द्र हैं।

A Unit of Kashi Cinema & Media Studies
THIRD EYE MEDIA PICTURE'S
DIGITAL MEDIA | BRANDING | ADD FILM PRODUCTION | DOCUMENTARY FILM
www.thirdeyemediapictures.com
thirdeyemediapictures@gmail.com
9551970001, 9936370001
S-2/503 AM. Sikraul (Near Circuitt House), Varanasi-221002

समाचार कार्यालय
1/253, नारायनपुर, भोजूबीर, वाराणसी-221003 व मुंसफ कटरा, जी.टी. रोड, चन्दौली-232304,
: आगामी वेब :
www.anivaryaprashna.com
(Coming Soon)

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक श्री छतिश कुमार द्विवेदी द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए–14/36, भारद्वाजी टोला, थाना–आदमपुर, वाराणसी से मुद्रित एवं प्रधान व पंजीकृत कार्यालय–घोड़सारी, पोस्ट–अमिलिया, शहाबगंज, चकिया, चन्दौली– 232118 उ. प्र., से प्रकाशित, संपादक–छतिश कुमार द्विवेदी, टाईटल कोड– *UPHIN,48708.* बाई लाइन समाचारों, विचारों व साक्षात्कारों के लिये प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है। सभी विवादों के लिए वाराणसी न्यायालय मान्य होगा। 9161099088 / anivaryaprashna@gmail.com